कलाकृति

वर्ष 2017

संपादक मंडल

संरक्षक

विनोद कुमार

सचिव

मुख्य संपादक

इन्दु रावत, प्रशासनिक प्रभारी,

वरिष्ठ आशुलिपिक

उपसंपादक

कल्पना देवानी,

हिन्दी अनुवादक

सहयोग

राजीव कुमार गौड़,

सहायक सचिव, तकनीकी

पारूल कपूर, शिल्पी मदनावत, कोमल गुप्ता

कंसल्टेन्ट्स

सम्पादकीय पता

दिल्ली नगर कला आयोग

यू.जी. तथा प्रथम तल, भारत पर्यावास केंद्र

लोधी रोड, नई दिल्ली

विषय सूची

	पृष्ठ सं.
1. सरस्वती वंदना	14
2. हिंदी लिखते समय कृपया ध्यान दें	15
3. हम इतना तो कर सकते हैं	15
4. राजभाषा नियम, 1976 – प्रमुख नियम	16
5. स्वच्छ भारत अभियान	21
6. महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ मे शौचालयों की उपयोगिता	22
7. आधुनिक जीवन शैली और मानसिक समस्याएं	26
8. सम–विषम	28
9. डिमोनिटाइज़ेशन का भूत	29
10. स्वच्छ भारत अभियान	30
11. हंसो हंसाओ	31
12. उच्च तकनीक शौचालय	33
13. दिल्ली में जलाशयों तथा हरित क्षेत्रों का पुनःजीवन–हरिनगर अध्ययन	40
14. जौन्ती गांव	46
15. कचरा प्रबंधन, सी.आर. पार्क, दिल्ली	51
16. संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें तथा संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण	57
17. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली की पत्रिका मंदाकिनी में प्रकाशित कविता तथा लेख	56
18. सद्भावना	59
19. शायद यही है ज़िंदगी	60
20. यही जीवन है	61
21. ज़िद	62
22. चित्र, दिल्ली नगर कला आयोग	63
23. सरकार की राजभाषा नीति	64

संदेश

दिल्ली नगर कला आयोग को "कलाकृति" पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी विश्व की एक प्राचीन समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है कम्प्यूटर के इस युग में हिंदी भाषा भी पीछे नहीं है। हिंदी आम जन की भाषा है और सभी कल्याणकारी योजनाएं तभी प्रभावी बन सकेंगी जब उनकी जानकारी आम जन की भाषा में उन तक पहुंचेगी।

मैं आशा करता हूं कि अधिक सरल और जनोपयोगी भाषा के रूप में सभी अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित होंगे।

(हरदीप सिंह पुरी)
माननीय आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री
(स्वतंत्र प्रभार)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के दिल्ली नगर कला आयोग द्वारा "कलाकृति" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका में आयोग के विभिन्न पदाधिकारियों की भिन्न–भिन्न विषयों पर रचनाएं प्रकाशित की गई हैं। इसके दायरे को और बढ़ाया जा सकता है। राजभाषा विभाग समय–समय पर शासकीय प्रभाग में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु अनेक कदम उठाता रहता है। पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। पत्रिका में समसामयिक, लोकोपयोगी एवं रूचिकर विषयों का समावेश हो तो पाठकों को पत्रिका पढ़ने में सहानुभूति होगी।

(दुर्गा शंकर मिश्र), सचिव
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

संदेश

भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़ें गहरी हैं और ये विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण से गुज़र कर सदियों से विकसित हुई हैं भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिंदी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एंव प्रभावी माध्यम है।

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण तथा पत्राचार को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए। वास्तविकता में हिंदी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रुप में लिखा जाए ताकि हिंदी जानने वाले तथा हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों द्वारा यह आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढ़ा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमें अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी।

(धर्मेन्द्र)
संयुक्त सचिव (प्रशासन)
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

संदेश

आज हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा से आगे बढ़कर विश्वभाषा बनने की तैयारी कर रही है। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए पत्रिका एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस पत्रिका में विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक लेख, कविताएं तथा अन्य रचनाएं गागर में सागर हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं तथा सभी को मेरा यही संदेश है कि वे इस कार्य को जारी रखें।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढ़ा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमें अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी।

(आर.के. द्विवेदी)
पूर्व निदेशक (रा.भा.)
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

संदेश

भारत के संविधान में देवनागरी में लिखित हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है अतः अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में करना एवं हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। दिल्ली नगर कला आयोग एक तकनीकी कार्यालय है। इसके बावजूद अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में अधिक से अधिक काम किया जाना उनके हिन्दी प्रेम और राष्ट्र प्रेम को दर्शाता है।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि दिल्ली नगर कला आयोग अपनी हिन्दी गृह पत्रिका "कलाकृति" प्रकाशित करने जा रहा है। मैं पत्रिका में लेख भेजने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ कि उनके सहयोग के कारण ही आयोग की पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हो सका।

(डॉ. पी.एस.एन. राव)
अध्यक्ष
दिल्ली नगर कला आयोग

संदेश

हिन्दी अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा आज राजभाषा, राष्ट्र भाषा एवं सम्पर्क भाषा तीनों दायित्वों का निर्वहन कर रही है। हिन्दी आज भी भारत की सांस्कृतिक विरासत को साझा करने वाली भाषा है। संवेदना के तारों को जोड़ने वाली भाषा है। प्यार बाँटने वाली भाषा है। दुख बंटाने वाली भाषा है। आत्मीयता की पुकार मचाने वाली भाषा है। राष्ट्रीय अस्मिता का भाव जगाने वाली भाषा है।

आयोग के रचनाकारों को पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई व शुभकामनाएं।

सोनाली रस्तोगी

(सोनाली रस्तोगी)
सदस्य
दिल्ली नगर कला आयोग

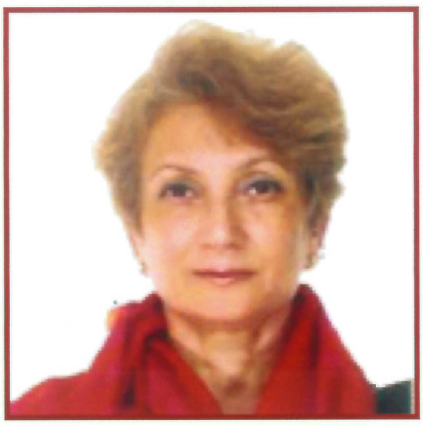

संदेश

हिंदी पत्रिकाओं को छापने से अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी लिखने के लिए उनका लगाव नजर आता है। गृह पत्रिकाएं जहां भाषा के विकास में अपना योगदान देती हैं, वहीं राजभाषा की बढ़ोत्तरी में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मुझे यकीन है कि यह पत्रिका हिंदी के उपयोग में निश्चित रुप से सफल होगी।

आयोग का यह प्रयास यकीनन प्रशंसनीय है। पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

(सोनाली भगवती)
सदस्य
दिल्ली नगर कला आयोग

संदेश

भाषा एवं संस्कृति किसी भी समाज और राष्ट्र की धरोहर तथा पहचान होती है। हमें गर्व है कि हम ऐसे भारत देश के नागरिक हैं जिस देश में बहुत सारी भाषाएं तथा संस्कृतियां एक साथ है। हमारी एक सामाजिक संस्कृति है। सभी संस्कृतियां एक सूत्र में बंध कर भारतीय संस्कृति का निर्माण करती हैं। हमें सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए यह भी प्रसन्नता के साथा स्वीकार करना चाहिए कि आज हमारे पूरे देश की भाषा के रूप में हिंदी का प्रचलन है।

हिन्दी ऐसी भाषा है जिसे पूरे देश में बहुत पहले से समझा, बोला, पढ़ा और लिखा जाता रहा है। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को कभी भी किसी ने किसी पर लादा नहीं है। हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी है।

'कलाकृति' के सफल प्रकाशन ने लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

समीर माथुर

(समीर माथुर)
सदस्य
दिल्ली नगर कला आयोग

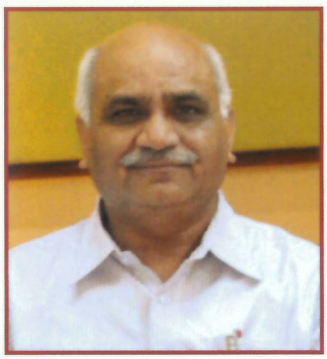

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है। ऐसी मान्यता है कि भारत में हर 10 मील पर भाषा बदल जाती है। संघ की राजभाषा नीति के बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दिशा में इन पत्रिकाओं के प्रकाशन से हमें दोहरा लाभ मिलता है। पत्रिकाएँ विभाग के नवोदित रचनाकारों के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सशक्त मंच तैयार करती हैं।

आज भारतवर्ष की राजभाषा होने के नाते हम सब का नैतिक और संवैधानिक दायित्व है कि हम सब अपना दैनिक सरकारी कार्य राजभाषा हिन्दी में निष्पादित करें। आशा है कि आयोग के इन सामूहिक प्रयासों से अधिकारी/कर्मचारी जागरूक होकर अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करेंगे।

कलाकृति पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए कार्यालय को मेरा साधुवाद।

(विनोद कुमार)
सचिव,
दिल्ली नगर कला आयोग

सरस्वती वंदना

हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
एक तू ही है पूर्ण, हे शारदे मां।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां।

मुनियों ने समझी मुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे मां।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मिटा दे तू हमारे अंधकार हे मां
उजालों का हमको संसार दे मां।

हिंदी लिखते समय कृपया ध्यान दें !

- पत्र लिखने में सरल हिंदी का प्रयोग करें ताकि उसे सभी आसानी से समझ सकें।
- पत्राचार में आम शब्दों का ही अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए। हिंदी की बोलियों के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने मे हिचक नहीं होनी चाहिए।
- अच्छी हिंदी जानने वाले कभी–कभी उन लोगों की कठिनाई नहीं समझ पाते जिन्होंने हाल ही में थोड़ी बहुत हिंदी सीखी है। ऐसे लोगों को इनकी कठिनाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए और अपने पांडित्य का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।
- हिंदी के वाक्यों में संस्कृत के कठिन शब्दों का अनावश्यक प्रयोग न करें तथा अंग्रेजी की वाक्य संरचना से बचें अर्थात वाक्य रचना हिंदी की प्रकृति के अनुसार ही होनी चाहिए। वह अंग्रेजी मूल का अटपटा अनुवाद नहीं होना चाहिए।
- जहाँ कहीं भी यह लगे कि पढ़ने वाले को हिंदी में लिखे किसी शब्द या पदनाम को समझने में कठिनाई हो सकती है, तब कोष्ठक में अंग्रेजी रूपान्तर भी लिख देना उपयोगी रहेगा।
- टिप्पणी एवं प्रारूपण में अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों, जैसे–बैंक, चेक, गारंटी, पेंशन, पासबुक आदि को देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित करके लिखना सभी के हित में होगा।
- शब्दों में एकरूपता बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग अथवा अपने कार्यालय द्वारा बनाई गई प्रशासनिक शब्दावली का ही प्रयोग करें।
- हिंदी के कार्य करने की शुरूआत छोटी–छोटी टिप्पणियों को हिन्दी में लिखकर करनी चाहिए।
- अंग्रेजी में सोचकर हिंदी में नहीं लिखना चाहिए। कोशिश तो हिंदी में सोचकर हिंदी में लिखने की होनी चाहिए ।

हम इतना तो कर सकते हैं।

- हिंदी में हस्ताक्षर करें।
- हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में दें।
- हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करें।
- हिंदी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें।
- परिपत्र, प्रशासनिक रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्ति, करार, निविदा प्रपत्र, निविदा सूचना को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करें।
- मुलाकाती कार्ड, रबर स्टाम्प, नाम पट्ट, डी ओ लैटर हैड दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रेजी) में बनवाएं और उसका प्रयोग करें।
- विभाग कवर, स्टेशनरी आदि पर कार्यालय का नाम द्विभाषी में ही दें।
- हिंदी में हस्ताक्षरित अंग्रेजी के पत्रों का उत्तर भी हिंदी में ही दें।
- उपस्थिति विवरण, जन्मदिन, बधाई पत्र, फार्म भरना इत्यादि काम हिंदी में करें।
- हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लें।
- हिन्दी पुस्तकालय की पुस्तकों, समाचार पत्र व पत्रिकाओं का लाभ उठाएँ।
- हिन्दी कार्ड की सहायता से छोटी–छोटी टिप्पणियाँ लिखने का प्रयास करें।
- फाइलों के ऊपर विषय हिंदी–अंग्रेजी में लिखें।
- अपने साथियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा दें।

किसी को आगे बढ़ता देखकर केकड़े की तरह उसकी टांग
खिंचाई मत करो बल्कि मछली की तरह छलांग लगाओ और आगे बढ़ो

राजभाषा नियम, 1976 - प्रमुख नियम

नियम संख्या	नियम
5	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं।
6	धारा 3(3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार और जारी किए जाएं।
7	हिंदी में हस्ताक्षरित या हिंदी में प्राप्त आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में दिया जाए।
8(4)	अधिसूचित कार्यालयों में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने संबंधी आदेश जारी करना।
9	हिंदी में प्रवीणता प्राप्त।
10(1)	हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त ।
10(4)	जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है उनके नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।
11	सभी मैनुअल व अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किए जाएंगे। सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष आदि हिंदी और अंग्रेजी में लिखे जायेंगे/प्रदर्शित होंगे।
12	केन्द्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम और नियमों तथा इनके तहत जारी आदेशों तथा निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त तथा प्रभावकारी जाँच बिंदु बनाए।

हिंदी में ही अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है

– राजा राममोहन राय

हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है

– डॉ. गियर्सन

स्वच्छ भारत अभियान

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन की नई दिल्ली, राजपथ पर शुरूआत करते हुए कहा था कि "एक स्वच्छ भारत के द्वारा ही देश 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर अपनी सर्वोत्तम श्रद्धांजलि दे सकता है"। 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन देश भर में व्यापक तौर पर राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में शुरू किया गया था। इस अभियान के अंतर्गत 2 अक्टूबर 2019 तक "स्वच्छ भारत" की परिकल्पना को साकार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया सबसे महत्वपूर्ण स्वच्छता अभियान है। श्री नरेन्द्र मोदी ने इंडिया गेट पर स्वच्छता के लिए आयोजित एक प्रतिज्ञा समारोह की अगुआई की थी। जिसमें देश भर से आए हुए लगभग 50 लाख सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। उन्होंने इस अवसर पर राजपथ पर एक पदयात्रा को भी झंडी दिखाई थी और न केवल सांकेतिक रूप से दो चार कदम चले बल्कि भाग लेने वालों के साथ काफी दूर तक चलकर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया।

स्वच्छता के जन अभियान की अगुआई करते हुए प्रधान मंत्री ने जनता को महात्मा गांधी के स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण वाले भारत के निर्माण के सपने को साकार करने के लिए प्रेरित किया। श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं मंदिर मार्ग पुलिस थाने में स्वच्छता अभियान को शुरू किया। धूल–मिट्टी को साफ़ करने के लिए झाड़ू उठाकर स्वच्छ भारत अभियान को पूरे राष्ट्र के लिए एक जन–आंदोलन का रूप दिया और कहा कि लोगों को न तो स्वयं गंदगी फैलानी चाहिए और न ही किसी और को फैलाने देना चाहिए। उन्होंने "न गंदगी करेंगे, न करने देंगे" का मंत्र भी दिया। श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ लोगों को स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए भी आमंत्रित किया और उनमें से हर एक से यह अनुरोध किया वो अन्य नौ लोगों को इस पहल में शामिल होने के लिए प्रेरित करें।

लोगों को इस अभियान में शामिल होने का आह्वान करके स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले चुका है। स्वच्छ भारत अभियान के संदेश ने लोगों के अंदर उत्तरदायित्व की एक अनुभूति जगा दी है। अब जबकि नागरिक पूरे देश में स्वच्छता के कामों में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो रहे हैं, महात्मा गांधी द्वारा देखा गया 'स्वच्छ भारत' का सपना अब साकार होने लगा है।

प्रधान मंत्री ने अपनी बातों और अपने कामों से स्वच्छ भारत के संदेश को लोगों के माध्यम से पूरे भारत और पूरी दुनिया में फैला दिया है। उन्होंने वाराणसी में भी स्वच्छता अभियान चलाया। उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन के तहत गंगा नदी के निकट अस्सी घाट पर फावड़ा चलाया। बड़ी संख्या में उनके साथ शामिल होकर स्वच्छता अभियान में उनका सहयोग दिया। स्वच्छता के महत्व को समझते हुए प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसके साथ ही साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने की बात भी उठाई है। ये स्वास्थ्य समस्यायें लगभग आधे भारतीय परिवारों को घर में उचित शौचालय न होने के कारण झेलनी पड़ रही हैं।

समाज के विभिन्न वर्गों ने आगे आकर स्वच्छता के इस जन अभियान में हिस्सा लिया है और अपना योगदान दिया है। सरकारी कर्मचारियों से लेकर जवानों तक, बालीवुड के अभिनेताओं से लेकर खिलाड़ियों तक, उद्योगपतियों से लेकर अध्यात्मिक गुरुओं तक सभी ने इस महान काम के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई है। देश भर के लाखों लोग सरकारी विभागों द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता के इन कामों में आए दिन सम्मिलित होते रहे हैं, इस काम में एनजीओ और स्थानीय सामुदायिक केन्द्र भी शामिल हैं, नाटकों और संगीत के माध्यम से सफाई–सुथराई और स्वास्थ्य के गहरे संबंध के संदेश को लोगों तक पहुंचाने के लिए बड़े पैमाने पर पूरे देश में स्वच्छता अभियान चलाये जा रहे हैं।

प्रधान मंत्री ने जनता और विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं द्वारा स्वच्छ भारत मिशन में हिस्सा लेने और एक स्वच्छ भारत के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों की सराहना की है। श्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया में जनता की भागीदारी की हमेशा मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। साथ ही साथ स्वच्छ भारत अभियान के एक हिस्से के तौर पर '#MyCleanIndia' अभियान भी शुरू किया गया है ताकि सफाई–सुथराई के लिए चलाए जा रहे इस अभियान में नागरिकों के योगदान को उजागर किया जा सके।

स्वच्छ भारत एक 'जन–आंदोलन' का रूप ले चुका है क्योंकि इसे जनता का अपार समर्थन मिला है। बड़ी संख्या में नागरिकों ने भी आगे आकर साफ–सुथरा भारत बनाने का प्रण किया है। स्वच्छ भारत अभियान के आरंभ के बाद गलियों की सफाई के लिए झाड़ू उठाना, कूड़े–करकट की सफाई, स्वच्छता पर ध्यान केन्द्रित करना और अपने चारों ओर स्वास्थ्यवर्धक वातावरण बनाना अब जनता की प्रकृति बन गई है। जनता 'स्वच्छता ईश्वरत्व के निकट है' के संदेश को फैलाने में मदद दे रही है और इस काम में शामिल हो रही है।

वर्ष 2015–16 प्रोत्साहन माह निबंध प्रतियोगिता के दौरान
आयोग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा लिखे गए निबंध

स्वच्छ भारत अभियान

राजीव कुमार गौड़
सहायक सचिव (त०)

Cleanliness is next to Godliness अर्थात 'स्वच्छता भक्ति से भी बढ़कर है' बापू के इन वचनों को सार्थक करने हेतु हमारे प्रधानमंत्री जी श्री दामोदर मोदी जी ने इस अभियान, जिसे स्वच्छ भारत अभियान का नाम दिया गया, की शुरूआत दिनांक 2 अक्तूबर 2014 को दिल्ली के एक बाल्मीकी मंदिर से की जो गोल मार्किट में स्थित है। प्रधानमंत्री जी ने अपने हाथों में झाड़ू लेकर इसके प्रांगण को साफ किया तथा मार्ग में पड़ने वाले दिल्ली पुलिस के थाना मंदिर मार्ग के प्रागंण को भी साफ किया। उनका उद्देश्य देश की 125 करोड़ जनता को यह मार्ग दिखाना था कि अपने और अपने आस–पास की जगह को साफ रखना हमारा दायित्व है। इस अभियान को देश के कोने–कोने में पहुंचाना उनका मकसद था ताकि हम भारतवासी यह दायित्व महसूस कर सकें कि हम अपने और आस–पास के वातावरण को साफ रखना है ताकि हमारे देश की आने वाली पीढ़ी अपने इस दायित्व का निर्वाह पूर्ण रूप से कर सके।

देश के मंत्रियों से लेकर आम जनता ने इसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी सरकारी तथा गैर–सरकारी लोगों ने 2 अक्तूबर के दिन अपने–अपने आफिसों एंवम् कार्यालयों में उपस्थिति देकर एंवम् अपने–अपने कार्यालयों को साफ रखकर इस अभियान को सफल बनाया और दूसरे लोगों के लिए भी एक मिसाल कायम की।

दि.न.क.आ. के अफसरों एंवम् कर्मचारियों ने भी इसमें बहुत बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया तथा अपने कार्यालय को साफ किया। दि.न.क.आ. भी इस अभियान का हिस्सा बनने जा रहा है।

दि.न.क.आ. की शहरी स्तरीय परियोजना की शाखा ने स्मार्ट पब्लिक शौचालयों का डिजाइन तैयार कर शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए हैं। इन शौचालयों के डिजाइन की यह खास बात है कि यह अपने आप में दूसरे स्थानीय निकायों द्वारा तैयार किए गए शौचालयों के डिजाइनों से हर तरह से भिन्न हैं। इन्हें कारखानों में तैयार किया जा सकता हैं तथा इन्हें एक–दो दिन की तैयारी के साथ अपने गंतव्य स्थानों पर स्थापित किया जा सकता है।

शहरी विकास मंत्रालय ने इन सब डिजाइनों को दिल्ली के सभी स्थानीय निकायों को भेज दिया है ताकि इनकी स्थापना उनके कार्यक्षेत्र वाली जगहों पर की जा सके।

हमारे देश में जगह–जगह पर, बाजारों में, पार्कों में, बस–अड्डों, रेलवे स्टेशनों तथा अन्य ऐसी जगहों पर जहां लोगों का आवागमन बहुत है शौचालयों की बहुत जरूरत हैं। यह दि.न.क.आ. के लिए तथा स्वच्छ, भारत अभियान के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

इस स्वच्छता अभियान का मकसद लोगों को अपने आस–पास की जगहों एवं अपने शहर व देश के लिए एक दायित्व देना है तथा देश के सभी 125 करोड़ देशवासियों को एक मकसद देना हैं ताकि वह अपने इस कर्तव्य का निर्वाह पूर्ण रूप से कर सकें।

अंत मे यही कहना चाहता हूँ कि अगर हम सभी देशवासी प्रधानमंत्री जी के इस स्वच्छ भारत अभियान में बढ़चढ़ हिस्सा लेकर इसे सफल बनाते हैं तथा और दूसरे लोगों को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो यह बापू की 150 वीं जन्मतिथि जो कि 2 अक्तूबर 2019 को है, हम सभी देशवासियों की तरफ से उन्हें सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

हिंदी की प्रगति से ही देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी

महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ में शौचालयों की उपयोगिता

निशि सचदेवा
वास्तुक सहायक

भारत को आज़ाद हुए आज 67 वर्ष से अधिक समय हो चुका है और आज भी हम इस विषय पर बात करते हैं कि महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ में शौचालयों की उपयोगिता क्या है जिससे एक हास्यास्पद की स्थिति का भास होता है तथा शर्म से गड़ जाने का भास होता है।

अपने आप को संसार की दृष्टि में भारत देश एक शक्तिशाली देशों की सूची में लाना चाहता है परंतु अपने घर (देश) की स्थिति आज भी दयनीय है।

सुबह–2 रेलवे स्टेशन पर महिलाओं को कतार–बद्ध रेलवे लाइन पर देख कर आज भी आंखें शर्म से झुक जाती है। उन महिलाओं की दशा सोच कर ही मन में सिहरन उठ जाती है। प्रकृति के नियम अनुसार सब को यह कार्य करना आवश्यक है अतः सरकार की तरफ से पहल होनी चाहिये कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए झुग्गी झोपड़ी वासियों के लिये सुलभ शौचालयों की व्यवस्था हो और साफ सफाई का धयान रखते हुए उचित प्रबंध हो।

दिल्ली नगर कला आयोग की तरफ से कम खर्च में हाई टेक टॉयलेट की सुविधा दिल्ली में की जा रही है।

खुले में शौचालयों के जाने से सम्पूर्ण वातावरण पर अत्यधिक बुरा प्रभाव होता है, वातावरण में बदबू और भयानक कीटाणु फैल जाते हैं जिसका असर हर प्राणी पर होता है और बीमारी का जन्म होता हैं। इन बीमारियों की रोकथाम के लिए भी अति आवश्यक है कि शौचालय का उपयोग किया जाये। मनचलों की रोकथाम के लिए भी महिलाओं का शौचालयों द्वारा प्रयोग करना कुछ हद तक महिलाओं की सुरक्षा का कारण हो सकता है। पिछले दिनों अखबारों में यह समाचार छपा कि शाम के समय दो बहनों द्वारा खुले में शौचालय जाने के कारण कुछ मनचलों ने सारी हदें पार कर दीं। यदि घर के करीब या घर में शौचालय हो तो ऐसी परिस्थितियों से बचा जा सकता है।

आज आधुनिक भारत में हम इस विषय पर बात कर रहें हैं कि महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ में शौचालयों की उपयोगिता है अथवा नहीं यह अपने आप में ही यह शर्म का विषय है। परंतु जो सत्य है उससे हम आखें नहीं मूंद सकते। आज इस विषय पर कई NGO भी काम कर रही हैं। दिल्ली तथा उसके आस–पास के गांवों में शौचालयों की व्यवस्था की जा रही है।

शौचालय बना देना ही काफी नहीं शौचालयों का उपयोग उनका रख–रखाव भी एक विषय है। सफाई की व्यवस्था बहुत बड़ा प्रश्न है। हर लिहाज से सुरक्षा सफाई पर ही निर्भर करती हैं। महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ मे शौचालयों का जीवन में बहुत योगदान है अतः जीवन में एक पेड़ लगाने के साथ एक शौचालय बनाने का भी प्रण लें और महिलाओं की सुरक्षा पर ध्यान दें।

जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है
वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है
और न नुकसान का
यद्यपि ये दोनों उसे अन्त में अपने आप प्राप्त हो जाते हैं।

– विलियम पेन

महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ में शौचालयों की उपयोगिता

इंदु रावत
वरिष्ठ आशुलिपिक

"महिला सुरक्षा में शौचालयों की उपयोगिता" यह कथन प्रथम दृष्टि में तो अटपटा सा प्रतीत होता है परंतु गहनता से विचार किये जाने पर सटीक बैठता है।

शौचालयों की उपयोगिता तो सभी के लिए है परंतु महिलाओं के सम्मान तथा सुरक्षा के संदर्भ में यह और भी विचारणीय विषय है। हमारे देश में अभी भी 53% लोग खुले में शौच करने के लिए मजबूर हैं। विश्व के सभी विकसित देशों में भारत का पहला स्थान है जहां आज भी आधी आबादी शौचालयों से वंचित है। भारत सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत' तथा 'निर्मल भारत' जैसे अभियान चलाये गये हैं जिनका उद्देश्य सन 2019 तथा 2022 तक देश को खुले में शौच से मुक्त करना है। सरकार द्वारा इन कार्यक्रमों के अधीन अनुदान राशि दी जाती है जिससे शौचालयों का निर्माण करवाया जा सके साथ ही जल प्रबंधन तथा मल निपटान की भी सुविधा उपलब्ध करवाई जा सके।

सन 2001 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रत्येक वर्ष में 19 नवम्बर को 'विश्व शौचालय दिवस' मनाने की घोषणा की परंतु हम शहरी लोगों को शायद ही इस दिवस की कोई जानकारी हो गांव तथा कस्बों में लोगों की स्थिति शौचालयों के संदर्भ में अधिक संतोषजनक नहीं है। जानकारी तथा सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण इलाकों के निवासी विशेषतया महिलायें तथा बच्चे खुले में शौच के लिए विवश हैं। खुले में शौच से पेट संबधी बीमारियां तथा संक्रमण का तो खतरा है ही साथ ही भूजल का प्रदूषण हो सकता है विशेषकर मानसून में। सामाजिक अवधारणाओं तथा मर्यादाओं के चलते महिलायें तथा बच्चियां प्रातः अंधेरे में ही दैनिक कार्यों की निवृति हेतु नदी किनारे या खेतों में शौच के लिये विवश है यह जानते हुए भी कि उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। कई ऐसी घटनाएं हुई हैं जिसमें शौच हेतु गई महिलाओं पर हमला कर उन्हें अपमानित किया गया। उनकी अस्मिता प्रत्येक दिन अपनी सुरक्षा से समझौता कर खुले में शौच के लिए विवश है। किसी के आने का डर, किसी के देख लेने का डर अपनी सुरक्षा से समझौता, अपनी सेहत से समझौता इत्यादि कारणों तथा परिणामों को जानते हुए भी महिलायें निसहाय हैं क्योंकि यह एक ऐसी स्थिति है जिसे कोई अनदेखा नहीं कर सकता तथा नित्य कर्म मानव की प्राकृतिक क्रिया है। स्कूलों में शौचालयों का अभाव, बच्चियों को शिक्षा से दूर करता जा रहा है। उपरोक्त सभी स्थितियों का नतीजा कहें या सबक कि महिलाएं स्वयं अपनी सुरक्षा हेतु आगे आ रही हैं। मध्य प्रदेश में ऐसी ही कई महिलाओं ने मिलकर घरों में शौचालय निर्माण का प्रण लिया तथा अन्य पांच महिलाओं को भी ऐसा ही प्रण दिलवाया नतीजन आज राज्य सरकार की सहायता तथा नैतिक दबाव के चलते मध्य प्रदेश के उस गांव में अधिकतर घरों में मर्यादा अभियान के चलते शौचालय की सुविधा है। सुलभ इंटरनेशनल का योगदान भी इस दिशा में मील का पत्थर माना जा सकता है जिन्होंने देश को इस समस्या से अवगत करवाया।

समकालीन भारत सरकार का भी विषय में योगदान है। प्रधानमंत्री जी ने लालकिले की प्राचीर से देशवासियों का आह्वान किया कि महिलाओं तथा बच्चियों की सुरक्षा हमारा परम कर्तव्य होना चाहिये। 'पहले शौचालय फिर देवालय' वाली उनकी सोच महिलाओं के प्रति उनके सम्मान तथा सरोकार को झलकाती है। हर घर, स्कूल में शौचालय होना ही चाहिये, यह आज की मांग है। आज़ादी के 66 वर्षो में भी आधी आबादी खुले में शौच करे यह स्थिति अधिक समय नहीं रहनी चाहिए।

मेरा ऐसा मानना है कि प्रत्येक स्त्री, बच्ची या महिला को अपनी सुरक्षा को लेकर जागरुक होने की आवश्यकता है। समय आ गया है कि महिलाओं को स्वयं तथा अपने परिवार की सेहत के लिए, सुरक्षा के लिए आगे आकर ठोस कदम उठाना होगा। प्रत्येक नागरिक को अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी को निभाना होगा। जैसे सिक्किम देश का सबसे पहला खुले में शौच मुक्त प्रदेश बना है वैसे ही हर राज्य प्रदेश को स्वयं को साबित करना होगा। यह प्रण लेना होगा कि देश को खुले में शौच से मुक्त करना है। प्रधानमंत्री जी ने सन 2019 में राष्ट्रपिता गांधीजी की 150वीं जयंती पर देश को खुले में शौच से मुक्त करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया है उसमें प्रत्येक नागरिक को अपनी–अपनी भागीदारी साबित करनी होगी तभी 'भारत–स्वच्छ भारत–मेरा भारत' का निर्माण होगा।

देश को एकता सूत्र में बांधने की शक्ति केवल हिन्दी में हैं
– इन्दिरा गांधी

स्वच्छ भारत अभियान

गोपाल सिंह
सहायक

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार द्वारा आरम्भ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। इसका उद्देश्य गलियों, सड़कों और पार्कों को साफ–सुथरा करना है।

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता से पहले 'स्वच्छता, आजादी से महत्वपूर्ण है' कहा था। उन्होंने लोगों से साफ–सफाई और स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन में शामिल करने को कहा। स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन, स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। इस अभियान में शौचालय का निर्माण और भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को बढ़ावा देना है। इस अभियान का आरम्भ राजघाट, नई दिल्ली 02 अक्तूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शुरू किया। महात्मा गांधी का सपना था कि भारतवासी साफ–सफाई और स्वच्छता सीखें। वे पर्यावरण की स्वच्छता पर ध्यान दें। अगर भारत के लोग साफ–सफाई पर ध्यान देंगे तो स्वस्थ रहेंगे। इससे भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

विद्यालयों में छोटे बच्चे साफ–सफाई और स्वच्छता के बारे में सीखते हैं। विद्यार्थी गंदगी, कूड़ा और कचरे के नुकसान के बारे में समझेंगे। बड़े होकर विद्यार्थी देश के नागरिक बनेंगे तो भारत को स्वच्छ और साफ रखेंगे ।

स्कूलों और भारत के ग्रामीण क्षेत्र में शौचालयों का निर्माण होना चाहिये।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्रत्येक पारिवारिक सदस्य को व्यक्तिगत रूप से शौचालयों के निर्माण के लिये लगत ₹10,000.00 से बढ़ाकर ₹12,000.00 कर दिया गया है। यह राशि सरकार द्वारा सहायता के रूप में ₹9,000.00 और राज्य सरकार का योगदान ₹3,000.00 है।

जीवन सूत्र

वक्त, दोस्त और रिश्ते ये वे चीजें है जो हमें मिलती तो मुफ्त हैं लेकिन हमें इनकी कीमत का पता तब चलता है, जब ये कहीं खो जाती हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के संदर्भ में शौचालायों की उपयोगिता

रविन्द्र कुमार
कनिष्ठ आशुलिपिक

प्राचीन काल से ही संसार में महिलाओं का दोयम दर्जे का नागरिक माना गया हैं। इस पुरातन प्रथा में पुरूष हमेशा से ही निर्भीक होने का आचरण करता रहा है। चाहे वो परिवार हो, समाज हो या फिर अन्य सामजिक संबंध, पुरूष हमेशा से ही उसे कोई खास तवज्जो नहीं देता है। महिलाएं हमेशा से ही उनके अत्याचारों का शिकार रही है।

शौचालय के संबध में भी वही बात लागू होती है वहां भी पुरूष निर्भीक हो कर कहीं भी मूत्रविसर्जन, शौच करने लग जाते हैं किन्तु महिलाएं क्या करें। ज्यादातर दीवारों पर पान के पीकों के बाद दूसरा नंबर मूत्रविसर्जन का ही आता हैं।

अभी इस 15 अगस्त पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक नारा दिया हैं 'पहले शौचालय फिर देवालय' यानि पहले शौचालय का निर्माण जरूरी हैं न कि मंदिर का निर्माण। अर्थात मंदिर तो प्रायः सभी घरों में होता ही है परन्तु शौचालय नहीं; भारत की ज्यादातर जनसंख्या अभी भी खुले में शौच में जाती हैं। उसके लिए वह प्रायः रेल की पटरियों, खेतों में या फिर नदियों के किनारों का उपयोग करते हैं। परन्तु घर की महिलाएं क्या करें, घर में शौचालय न होने पर उन्हें भी बाहर जाना ही पड़ता है। बाहर जाने पर प्रायः उनकी सुरक्षा खतरे में ही रहती है। घर के बाहर उन्हें प्रायः किसी बड़े के साथ ही जाना पड़ता है परन्तु घर की बच्चियॉ क्या करें। कभी रात के खाने के बाद, या फिर भोर होने से पहले का इन्तजार करना ही पड़ता है। अभी हाल ही में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में वृद्दि हुई है उसमें ज्यादातर अपराध शौच जाते समय ही हुए हैं। यह अपराध भी पुरूषवादी मानसिकता की ही उपज हैं। महिलाओं को अपनी सुरक्षा से समझौता करना ही होता है। महिलाओं को इसी सुरक्षा बंधन को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री ने यह नारा दिया है। मनुष्य का जो प्रारम्भिक कार्य होता है उससे निवृत होने में किसी को कोई समस्या न आए। भारत की ज्यादातर संख्या अभी भी खुले में शौच करती है। इससे मैला प्रथा का भी बढ़ावा मिलता है। अगर घरों में शौचालयों का निर्माण हो जाए तो महिलाओं को रात या फिर दिन के समय किसी के साथ की मोहताज होने की आवश्यकता नहीं है तथा उनकी सुरक्षा भी खतरे में नहीं रहेगी। सबसे बड़ी बात है इसके लिए एक जागरूक समाज की। अगर समाज जागरूक होगा तो ही वह इसकी उपयोगिता को समझेगा। इसके लिए प्रथम पहल महिलाओं को ही करनी पड़ेगी उन्हें ही अपनी सुरक्षा के साथ कोई भी समझौता नहीं करना होगा वरन जागरूक भी होना है। समाज जैसे–जैसे जागरूक हो रहा है वो दिन दूर नहीं जब हर घर में भी शौचालयों का निर्माण होने लगेगा। टी वी पर एक ऐड आता है उसमें भी यही दिखाया जाता है कि लड़की ने इसलिए अपनी शादी तोड़ दी कि उसके ससुराल में शौचालय नहीं था। महिलाओं को ही शौचालय की उपयोगिता के महत्व को समझना होगा तभी एक स्वस्थ भारत का निर्माण होगा। कहा जाता हैं कि महिलाएं अब पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, उन्हें इस क्षेत्र में भी आगे आना होगा तथा इसके लिए लड़ना होगा।

घरों में शौचालय होने पर उन्हें किसी की दया की जरूरत नहीं है। इससे उनके साथ होने वाले अपराधों में कमी आयेगी क्योंकि महिलाओं के साथ होने वाले रेप केसों में ज्यादातर उनके शौच जाते समय ही हुए हैं। महिलाएं शौच के लिए भोर के समय का ही प्रयोग करती हैं तथा अधिकतर खेतों में ही जाती हैं वहीं सबसे ज्यादा खतरा होता है। उनके अपहरण भी ज्यादातर शौच जाते समय ही होते हैं। जिस दिन महिलाएं अपने अधिकारों को जान लेंगी उस दिन से वह भी निर्भय हो कर समाज में रह सकेंगी।

शौचालयों का महत्व सिर्फ दैनिक कार्यों का निपटाना ही नहीं हैं परन्तु एक सम्पूर्ण घर की निशानी हैं घर में मुख्यतः कमरा, किचन और शौचालय हो, वही एक सम्पूर्ण घर माना जाता हैं। शौचालय न होने पर वह अपूर्ण ही रहता है। सार रूप में हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रकार मंदिर का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है ठीक उसी प्रकार शौचालय होने पर महिलाएं अपनी सुरक्षा का अनुभव करती हैं। उन्हें फिर शौच के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। इससे उनके साथ होने वाले अपराधों में भी कमी आयेगी और यहीं से एक स्वस्थ भारत के निर्माण होगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का भविष्य उज्जवल है
– डॉ. राजबली पाण्डेय

आधुनिक जीवन शैली और मानसिक समस्याएं

राघवेन्द्र सिंह
प्रशासनिक अधिकारी
दिल्ली नगर कला आयोग

'परिवेश' किसी भी व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व रखता है। जीवन परिवेश जीवन शैली के अनुसार ही 'व्यक्ति' का 'व्यक्तित्व' होता है। हम कभी–कभी किसी व्यक्ति से इतने ज्यादा प्रभावित हो जाते हैं कि हम उसकी स्टाइल/लाइफ स्टाइल की 'कापी'/नकल करने लगते हैं।

जीवन शैली एक जिंदगी को जीने की कला है। जैसे कला अच्छी या बुरी हो सकती है वैसे ही जीवन शैली भी 'अच्छी' या 'बुरी' होती है/या हो सकती है। अच्छी आदत का परिणाम अच्छा होता है और बुरी आदत के परिणाम बुरे होते हैं। जीवन शैली में आपकी जिंदगी के समग्र कार्य शामिल हो जाते हैं जैसे कि आपकी दिनचर्या, आपका खान–पान की आदत, पठन–पाठन, बोल–चाल का आपकी सोच। इसीलिये किसी भी व्यक्ति का जीवन व व्यक्तित्व उसकी जीवन शैली से प्रभावित होता है और समाज के अन्य वर्गों को प्रभावित भी करता है।

आप सोचकर अनुभव करें कि आज के जीवन में एक व्यक्ति की जीवन शैली एक गाँव में कैसी होगी, छोटे शहर में कैसी होगी व दिल्ली व मुम्बई जैसे महानगरों में कैसी होगी। अगर वृहद तौर पर देखा जाये तो हमारे परिवेश से जीवन शैली प्रभावित होती है तथा जीवन–शैली हमें हमारे परिवेश को प्रभावित करती है।

मसलन छोटे गॉव से छोटे शहरों से लोग परिवार को छोड़कर जीवन अर्जन के लिये 'धन कमाने' बड़े शहरों में आते हैं बगैर परिवार के रहते हैं, कम खर्च करने के कारण 'स्लम' एरिया में रहते हैं। यहां एक जीवन शैली बन जाती है। स्लम एरिया में रहने व परिवार से दूर रहने से तमाम अपराध जन्म लेते हैं। अकेले व परिवार से दूर रहने के कारण उनके अदंर उनके व्यवहार में एक अजीब सा रूखापन/चिड़चिड़ा–पन आ जाता है, उनका व्यवहार महिलाओं के साथ सहज नहीं होता है। कम समय में ज्यादा पैसा कमाने के चक्कर में और ज्यादा सुविधा खरीदने के चक्कर में तमाम मानवीय संवेदनायें समाप्त प्रायः हो गयी हैं क्योंकि हमारे पास समय नहीं है। हमारी जीवन शैली ही ऐसी हो गयी है। हम कभी–कभी इतने व्यग्र हो जाते हैं एक छोटी सी बात पर कि हिंसा करके किसी को शारीरिक नुकसान तो पहुंचा सकते हैं आप देख सकते हैं अखबारों में पढ़ते हैं कि छोटी सी बात पर सड़क पर एक मोटरसाइकल सवार ने दूसरे को चाकू मार कर घायल कर देता है। एक स्कूल का बच्चा अपने ही साथी को 'किडनैप' कर लेता है। एक व्यक्ति किसी लड़की के ऊपर तेजाब फैंक देता है क्योंकि लड़की उससे प्यार करने से मना कर देती है या वह खुद अपने आप को नुकसान पहुँचाता है, आत्महत्या करने की कोशिश करता है।

हमारी जीवन शैली की वजह से हमारे अंदर तमाम मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। बढ़ती जनसंख्या, नाभिकीय परिवार, शिक्षा की कमी, महँगाई, गरीबी, परस्पर कम्पीटीशन की दुर्भावना, ईर्ष्या आदि इसका कारण है। यह एक तरह से मानसिक वेदना है जो तमाम तरह की मानसिक समस्याएं पैदा करती है। कम समय में ज्यादा पैसा कमाना या पैसों का दुरूपयोग करना, अपने आप में 'अहम' लाना और इसी अहम की वजह से आपस में एक दूसरे को नीचा दिखाना।

इन मानसिक समस्याओं को निपटाने या दूर करने के लिये हमें अपनी जीवन शैली में सुरूचि के साथ परिवर्तन करने होगें ताकि हम एक अच्छे नागरिक बनें, स्वस्थ रहें तथा मानसिक विकारों से दूर रहें।

यदि आप सही हैं तो आपको क्रोधित होने की जरूरत नहीं,
और यदि आप गलत हैं तो आपको क्रोधित होने का हक नहीं।

आधुनिक जीवन शैली और मानसिक समस्याएं

राजवीर सिंह
हिन्दी टाइपिस्ट

भारतवर्ष देश एक महान देश होने के कारण अनेक भाषा भाषियों का मिश्रण है। यहाँ पर अपनी–अपनी कला तथा संस्कृति होते हुए भी सभी एक दूसरे के प्रति एकता, प्रेम, सद्भाव और सौहार्द बनाए हुए हैं।

देश में अधिकतम आबादी कृषि क्षेत्र है जो पूर्ण रूप से कृषि क्षेत्र पर निर्भर होती है तथा फसल अच्छी होने के लिए प्रकृति पर भी निर्भर रहती है। वर्षा होने तथा प्रकृति प्रकोप से भी बचना होता है।

जीवन सुखमय जीने के लिए लोग शहरी क्षेत्रों के तरफ आकर्षित होते हैं। शहरों में आने पर रोज़गार की तलाश व अच्छी पढ़ाई के लिए प्रत्यनशील होने से शहरों में पूर्ण रूप से रोजगार व उच्च शिक्षा प्राप्त न होने पर जीवन दुख मय होने लगता है।

परिवार का पालन–पोषण अच्छी तरह से न होने तथा रोजगार ठीक से न मिलने के कारण घरेलू समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। आमदनी कम खर्चा अधिक होने के कारण इस तरह की समस्या उत्पन्न होने कारण आज के नौजवान, स्त्री/पुरूष कड़ी मेहनत कर 12–14 घन्टे कम्प्यूटर या अन्य कॉल सैंटरों में अधिक समय तक कार्य करते हैं।

स्वच्छ एवं स्वस्थ रहने के लिए कम से कम 7–8 घंटे नीद अवश्य लेनी चाहिए। कार्य के समय अधिक आराम करने का समय कम होने कारण आज की युवा पीढ़ी नशे का सहारा बहुत अधिक लेने लगी है जिसके कारण तनावयुक्त है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छी मानसिकता होना तथा बहुत साफ सुथरा माहौल होना चाहिए ।

जब दिमाग तनावपूर्ण होता है तो अनेक समस्याएं पैदा होने लगती हैं। यहां तक कि व्यक्ति डिप्रेशन तक की बीमारी या अन्य घातक बीमारी से ग्रस्त होने लगता है।

इस प्रकार की समस्या/तनावग्रस्त होने के कारण माहौल दूषित होता है। परिवार में छोटे–बच्चे, बूढ़े माता–पिता तथा अन्य सदस्यों के साथ अच्छा आचरण/बर्ताव नहीं करते है जिसका दुष्प्रभाव समाज के प्रति जहर की तरह फैलता है जिसके कारण समाज में अनेक प्रकार के दोष–एवं अवगुण उत्पन्न होते हैं।

यहॉ तक कि नागरिक अपना विवेक छोड़ बैठते हैं। रास्ते व सड़कों पर छोटी–छोटी बातों पर लड़ते हैं और जान लेवा, हथियारों का प्रयोग भी करके दूसरे परिवारों को उजाड़ देते हैं।

अच्छे मनुष्य होने के नाते एक दूसरों का हित व परोपकारी बनने के लिए अच्छी संगत का होना अति आवश्यक है। स्वास्थ्य व मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए योग का सहारा लेना चाहिए और ब्रह्ममुहूर्त में उठकर ईश्वरीय स्मरण तथा माता–पिता के चरणों का स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक है जिससे मन को ऊर्जा प्राप्त होती है तथा बड़ों का आशीर्वाद लेने से जीवन सहज जीने का सुगम रास्ता निकलता है।

जीवन सूत्रः

हम लोग अपने आने वाले कल को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास करते हैं, लेकिन बेहतर कल आने पर आने वाले की चिंता में जीवन के आनंद से वंचित रह जाते हैं।

सम-विषम

कल्पना देवानी
हिंदी अनुवादक

दिल्ली में आई सम-विषम की स्थिति
ताकि प्रदूषण आए नियत्रंण में
पहल इस ओर थी सरकार की
सम तिथि पर सम गाड़ी संख्या
विषम दिन पर विषम गाड़ी न.
मिली जुली रही प्रतिक्रिया
जनमानस की इस ओर
जिनके पास सम संख्यक गाड़ी थी
किया एक दिन जन परिवहन का प्रयोग
कुछ के पास गर थी दोनों संख्याओं की गाड़ियां
उनकी निकली दोनों गाड़ियां

मोहल्ला भाईचारा हुआ शुरु
पूल परिवहन हुआ आरम्भ
प्रदूषण स्तर भी हुआ कम
कतिपय जनता हुई परेशान
मियां बीबी का छूटा साथ
इस पर भी हुआ चालान
कुछेक रास्ते हुए आसान
रास्ता जो एक घंटे में तय होता था
अब 35 मिनट में हुआ तय
रोड रेज का सुलझा मामला
कम हुई दिमाग की गर्मी और झमेला
ग्लोबल वार्मिगं को नियंत्रित करने का विचार
आया, चलो देर आए दुरुस्त आए.
आड, ईवन की ऐसी चली बयार
नेता आपस में लड़ि मरे, भली करे करतार
जीवन भी सम-विषम के ताने बाने में
चला करे बुना हुआ सा।

हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी
फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगी।

डिमोनिटाइज़ेशन का भूत

अमित मुखर्जी
कंसल्टेंट (प्रशासन)

आठ नवंबर सोलह को लोगों की दुनिया बदली,
जब सरकार ने डिमोनिटाइज़ेशन की घोषणा कर दी।
काले धन वालों का हुआ मुँह काला,
विरोधी दल चिल्लाये इस में है बड़ा घोटाला।

लोगों ने कठिनाई झेली साथ निभाए,
एटीएम कतारों मे घंटों खड़े रहे नहीं कतराए।
नोट लुप्त तो क्रेडिट प्रबल हुआ,
लोगों ने भिखारिओं को भी क्रेडिट पे पैसा ट्रांसफर किया।

कामवाली बाई को चेक से पेमेंट देने लगे,
सब्ज़ी वाले उधार पे सब्ज़ी बेचने लगे।
क्रेडिट की ऐसी आदत पड़ी,
कि सोनू को पॉकेट मनी भी क्रेडिट पे मिली ।

लड़के के घर वालों ने जब दहेज की मांग की,
लड़की वाले बोले लड़की क्रेडिट पे आप के नाम की।
प्यार मोहब्बत से संभाल के रखना,
वरना पचास दिन बाद लड़का समेत लौटा देना।

पत्नी शौहर से बोली मेरा प्यार क्रेडिट पे मत समझना,
और पचास दिन बाद तीन तलाक बोल पीछा मत छुड़ाना।

हमारे इन रेजगारियों को नोट ही संभालेंगे,
बिना नोट के यह सिक्के भटक जायेंगे।
शौहर बोला जब दिया है हाथों में हाथ ,
तो यह वादा रहा कि रहेगा जीवन भर का साथ।

इन रेजगारिओं को खोटों से बचाना है,
इन सिक्कों को पांच सौ में कल बदलना है।
रिश्वतखोरों की समस्या बढ़ी कि रिश्वत क्रेडिट पे कैसे लें,
अब तो कहावत हुई पुरानी कि एक हाथ दें और एक हाथ लें।

डिमोनिटाइज़ेशन ने भ्रष्टाचार की नींव को हिलाया,
जब जनता ने इसे गले से लगाया।
जब देश ने करवट बदली तो एक नई दास्ताँ हुई बयां,
घर घर से आवाज उठी मेरा भारत है महान मेरा भारत हे महान।

आपके शब्द, विचार और कार्य आपके भाग्य का निर्माण करते हैं

स्वच्छ भारत अभियान

दीपक चन्द्र बन्दूणी
अवर श्रेणी लिपिक

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है, जो भारत सरकार द्वारा चलाया गया है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत 4041 सांविधिक नगरों के सड़क मार्ग, पैदल मार्ग व अन्य स्थल आते हैं। यह एक बहुत बड़ा अभियान है जिसके तहत वर्ष 2019 तक भारत देश को स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया गया है। भारत सरकार के शहरी विकास, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय द्वारा स्वच्छ भारत अभियान को ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है। स्वच्छ भारत अभियान द्वारा मनुष्य के स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी जी के सपने को आगे बढ़ाना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने एक बार, भारत की स्वतन्त्रता से पहले, अपने समय के दौरान यह कहा था कि 'स्वच्छता आजादी से ज्यादा जरूरी है क्योंकि वे भारत की बुरी एवं गंदी स्थिति से पूरी तरह अवगत थे। उन्होंने भारत देश के नागरिकों को साफ–सफाई के बारे में बताया एवं इसे अपने दैनिक कार्यों में शामिल करने के लिए बहुत जोर दिया। परन्तु लोगों की कम रूचि के कारण यह असफल रहा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा महात्मा गांधी जी की 145वीं जयंती पर 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान को शुरू किया गया एवं श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा इस अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए भारत के सभी नागरिकों को इस अभियान से जुड़ने की अपील की गई।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती तक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है ताकि वर्ष 2019 में बापू जी की जयंती को स्वच्छ भारत अभियान की लक्ष्य प्राप्ति पर मनाया जाए। स्वच्छ भारत अभियान द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सभी भारत वासियों को प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 100 घंटे स्वच्छता के लिए निकालने के लिए अपील की है ताकि स्वच्छ भारत के लक्ष्य को शीघ्रताशीघ्र प्राप्त किया जा सके।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 2 अक्तूबर 2014 को मंदिर मार्ग पर स्थित बाल्मीकि सदन से झाड़ू लगाकर इस स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की गई थी एवं कई बड़ी हस्तियों को इस अभियान द्वारा जोड़ा भी गया था। यहाँ तक की टीवी चैनलों जैसे 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' भी इस अभियान का हिस्सा बना।

सरकारी कर्मचारियों द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के तहत 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छता की शपथ ली एवं 2 अक्तूबर 2014 को कार्यालय में अपने स्थानों को स्वच्छ रखने के लिए प्रयास किए।

अनुभव गलतियों के लिए चुना गया एक नाम है
– ऑस्कर वाईल्ड

हंसो हंसाओ

– अल्का धीर
व. आशुलिपिक

मास्टर जी– मुहावरे का अर्थ बताओ साँप की दुम पर पैर रखना
स्टूडेंट– पत्नी को मायके जाने से रोकने से रोकना
मास्टर जी– समझ नहीं पा रहे है कि इतनी गहरी जानकारी इन्हे कैसे हुई

पत्नी हरियाणा पुलिस से–
जी माहरा घरवाला पाँच दिन पहले गोभी लेने गया था
ईब तक कोणी आया
हरियाणा पुलिस– फेर के होया
कोई और सब्जी बना ले जरूरी है गोभी बनानी

सरकार ने फरमान जारी किया
पुरुष हो या स्त्री दुपहिया वाहन चालक को
हेलमेट पहनना
यह खबर सुन कर पत्नी ने अलमारी खोली
और बोली– हे भगवान अब इतने सारे मैचिंग हेलमेट खरीदने
पड़ेगे! पति ने एक्टीवा बेच दी

दो आदमियों कि बीबियाँ मेले मै खो गई जिसमें से
एक हरियाणा से थी और एक दिल्ली से थी
अपनी अपनी बीबी ढूंढते हुए वो आपस मे मिले
तुम्हारी वाली की पहचान ?
हरियाणा वाले ने दिल्ली वाले से पूछा
दिल्ली वाला बोला – 5" 7', गोरी भूरी आंखे और पतली है
स्लीवलेस पिंक टीशर्ट और लाल स्कर्ट पहने है
तुम्हारी की क्या पहचान है ?
हरियाणा वाला बोला मेरे वाली कै मार गोली
चाल तेरी ढूंढते हैं !

ताऊ मास्टर से मेरा छोटा पढ़ाई में कैसा सै ?
मास्टर चौधरी यूं समझ ले आर्यभट्ट ने जीरो
की खोज इसके खातिर ही करी थी !

संता सदाचार क्या होता है
बंता जैसे आम का अचार होता है
यह वैसे ही सादा अचार होता है

विचारों के युग में पुस्तकें ही अस्त्र हैं
– बेकम

दिल्ली नगर कला आयोग
नगर स्तरीय परियोजनाएं

उच्च तकनीक शौचालय

भारत की जनसंख्या के लगभग 60% आवासों में शौचालय नहीं है। यह संख्या गांवों में इससे भी अधिक लगभग 72% है। विद्यमान सीमित संख्या में उपलब्ध जन शौचालयों की दयनीय स्थिति के कारण जन सामान्य खुले में शौच करना बेहतर समझते हैं और इससे हैज़ा, टाइफाइड, हैपेटाइटिस, पीलिया आदि जैसी बीमारियों से जूझते हैं। एक अध्ययन के अनुसार बच्चों के बाधित विकास के कारणों में से एक कारण खुले में शौच होता है। खुले में शौच से कतिपय कीटाणु पैदा होते हैं जोकि शरीर में प्रवेश कर जाते हैं उससे बच्चों का विकास बाधित होता है।

महिलाओं के लिए जन शौचालयों का अभाव एक बड़ी समस्या है । यह अनुमान लगाया गया है कि दिल्ली में 25 लाख से अधिक महिलाएं उजाला होने से पूर्व ही शौच के लिए खुले मैदानों में जाती हैं और बढ़ते अपराध के चलते खुद को जोखिम में डालती हैं।

आयोग का सदैव यह विश्वास रहा है कि पर्याप्त जन सुविधाएं, नगर सौंदर्य वृद्धि में सहयोग करती हैं। दिल्ली नगर में जनशौचालयों सम्बंधी असंतोषजनक स्थिति को देखते हुए आयोग ने महसूस किया कि यह सही वक्त है जब बाजारों, अनधिकृत कालोनियों, स्लम तथा अन्य स्थानों जैसे बागीचों तथा पार्कों में जहाँ अधिक भीड़–भाड़ रहती है, वहाँ उच्च–तकनीकी स्वतः स्वच्छ जनशौचालय बनाए जाएं। वर्ष 2012 में भारत सरकार से अनुमोदन प्राप्त करने के पश्चात् आयोग ने प्रतियोगिता आधार पर कम कीमत, स्वतः स्वच्छ, उच्च तकनीक जनशौचालय प्रोटोटाईप निर्मित किया, विभिन्न स्थानों पर संस्थापित किया गया है ।

दिल्ली नगर कला आयोग को Washroom and Beyond द्वारा स्वच्छता के क्षेत्र में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानजनक अवार्ड से नवाज़ा गया।

उद्देश्य

- विशिष्ट और सौंदर्यपरक मनमोहक डिज़ाइन
- स्मार्ट समकालीन तथा पर्यावरण मित्र स्वरुप सामूहिक उत्पाद के लिए औद्योगिक पूर्वनिर्मित डिज़ाइन
- 15–20 वर्षों की दीर्घावधि के लिए
- लगभग 1.50 लाख प्रति सीट की कीमत
- तीर्थ संस्थापन हेतु बाधा रहित , पूर्व निर्मित स्थानों पर
- विज्ञापन तथा राजस्व सृजन के लिए पर्याप्त स्थान

प्रमुख लक्षण

- स्टील की परत चढ़े एल्यूमिनियम के जालीदार पैनल
- जैविक पाचक के प्रयोग से पर्यावरण संरक्षक बनाकर जल–मल निपटान
- एल.ई.डी. लाइटों के साथ सौर पैनल
- बेहतर कार्यकुशलता के लिए पी.एल.सी. (प्रोग्राम लॉजिक कंट्रोल)
- हवादार तथा पर्याप्त रोशनी
- छेड़छाड़ तथा बर्बरता प्रतिरोधक
- स्टेनलेस स्टील के मज़बूत और पानी की बचतकारी नल और टोटियां
- राजस्व अर्जन के लिए विज्ञापन पैनल
- सहज स्वच्छता और आसान रखरखाव का डिज़ाइन

स्ततः डी.आर.डी.ओ. जैविक पाचक के द्वारा अपशिष्ट निपटान

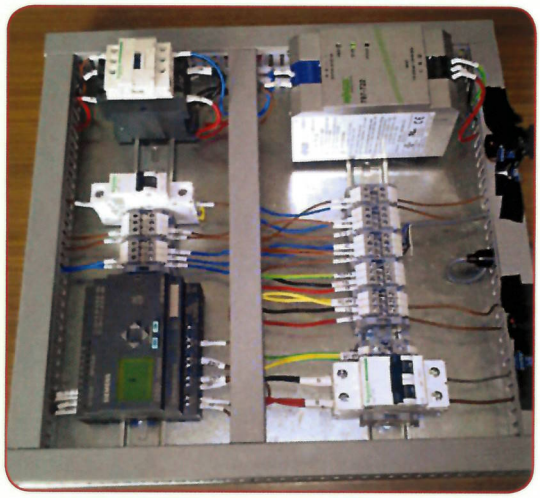

स्वचालितः उन्नत पी.एल सी.(प्रोग्राम लाजिक कंट्रोल) आधारित कंट्रोल आधारित लिंक

मूल्य आधारित : कम लागत रीसाईकिल सामग्री

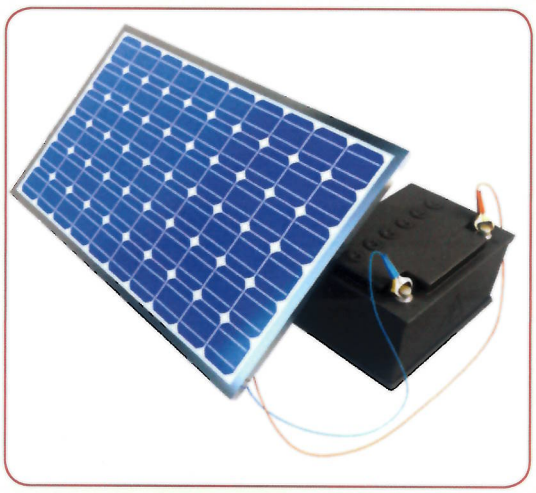

हरित ऊर्जा (क) सोलर पेनल (ख) उर्जा खपत तथा लम्बा चलने के लिए एल.ई.डी. लैम्प्स

डिजाइन 1

(एक यूनिट का माप 1.40 मी. से 1.40 मी.)
(आंतरिक ऊंचाई – 2.20 मी.) स्थान : मुस्तफा कमाल अतार्तुक मार्ग, नई दिल्ली

मौलिक वास्तुशास्त्र द्वारा प्रेरित प्राथमिक विषय बांस "Bamboo"

विनिर्देश:

- बाहरी : प्लास्टिक प्रबलित फाईबर (एफ.आर.पी.)
- आंतरिक : स्टील 304 ग्रेड, 1 मिली मी. मोटाई
- फ्रेम : हल्का स्टील (एम.एस.)

डिज़ाइन 2

(एक यूनिट का माप 1.50 मी. से 2.60 मी.)
(आंतरिक ऊंचाई–2.20 मी.)
स्थानः स्वामी दयाल अस्पताल, नई दिल्ली
षटकोणीय ट्विन यूनिट डिज़ाइन, महिला तथा कम्पार्टमेंट के साथ–साथ

विनिर्देश:

- बाहरीः पालीप्रोपलीन हनी कोम्ब (पी.यू)
- आंतरिकः स्टेंलेस स्टील 304 ग्रेड, 1 मिली मी. मोटा
- फ्रेमः पाली प्रोप्लीन हनी कोम्ब फोल्डिंग वाल

डिजाइन 3क

(यूनिट का मॉप 1.80 मी. X 3.0 मी.)
(आंतरिक ऊंचाई – 2.20 मी.)
स्थान : मंडी हाउस, नई दिल्ली

महिला तथा पुरूष के लिए अभिकल्पित दीर्घ वृत्ताकार ट्विन केबिन

विनिर्देश:

बाहरी : एल्यूमिनियम कम्पोज़िट पेनल (ए.सी.पी.)
आंतरिक : स्टेनलेस स्टील 304 ग्रेड, 1 मिली. मी. मोटाई
फ्रेम : गेल्वेनाईज़्ड आयरन(जीआई) तथा राकवूल इन्सुलेशन
स्थान : मंडी हाउस , नई दिल्ली

डिजाइन 3ख

अर्धव्यास – 1.10 मी.)
(आंतरिक ऊंचाई – 2.20 मी.)

प्रारूप तथा महिलाओं के लिए बेरल आकार सघन

विनिर्देश:

बाहरी: अल्यूमिनियम कम्पोज़िट पेनल (ए.सी.पी.)
आंतरिक: स्टेनलेस स्टील 304 ग्रेड, 1 मिली. मी. मोटाई
फ्रेम: गेल़वेनाईज़्ड जस्ती लोह (जी.आई.)

डिज़ाइन 4

(यूनिट का आकार – 1.80 मी. से 3.0 मी.)
(आंतरिक ऊंचाई– 2.20 मी.)
स्थान गेट सं. –6 राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली
पुरुष तथा महिला के लिए अभिकल्पित दीर्घ वृत्ताकार ट्विन केबिन
प्रारुप तथा महिलाओं के लिए बेरल आकार सघन

विनिर्देश:

- बाहरी : पी.यू. पेंटेड अल्यूमिनियम विनीरिंग
- आंतरिक: स्टेंलेस स्टील 304 ग्रेड, 1 मिली मी. मोटा
- फ्रेम: एल्यूमिनियम हनी कोम्ब स्टेनलेस स्टील वीनीरिंग सेंडविच पेनल संरचना गेल्वेनाईज्ड आयरन (जी आई) जस्ती लोह

डिजाइन 5

(यूनिट का ऑकार – 6.90 मी. से 2.75मी.)
(आंतरिक ऊंचाई – 2.20 मी.)
आंतरिक लेआउट विकल्प

विकल्प 01

02 महिला, डब्ल्यू सी. के. लो.वि.नि. के विनिर्देशों के अनुरूप एक सार्वजनिक शौचालय, तीन मूत्रालय, तीन वाशवेसिन

संयोजन

क. एक सार्वजनिक
ख. दो महिला डब्ल्यू.सी.
ग. तीन पुरूष डब्ल्यू.सी तथा चार मूत्रालय
घ. तीन वाशबेसिन

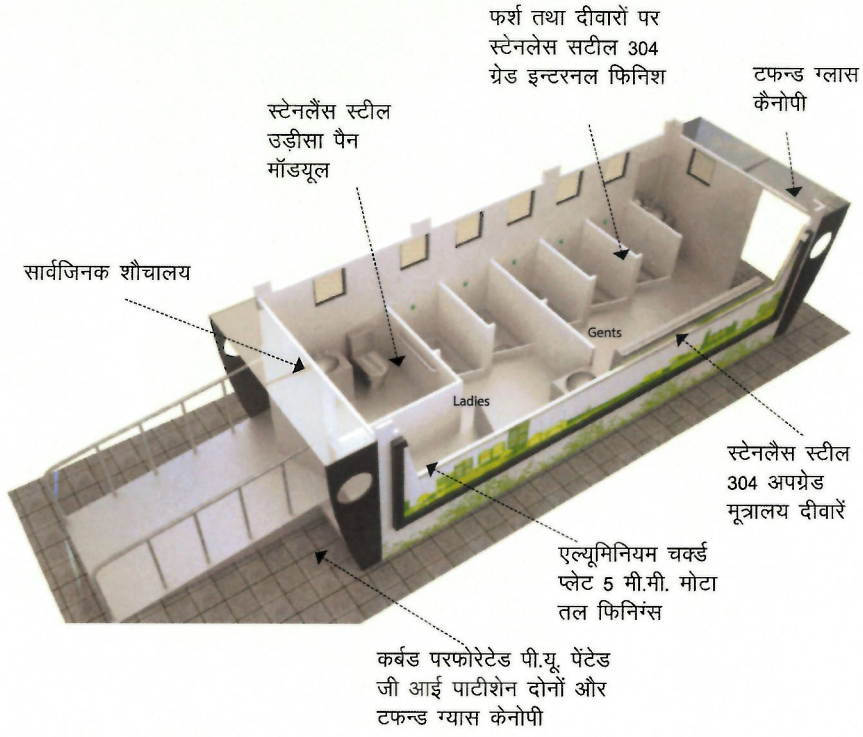

विकल्प 02

छ. डब्ल्यू सी तथा एक वॉशबेसिन के साथ

विकल्प 03

पांच डब्ल्यू सी के साथ पांच मूत्रालय तथा दो वाशबेसिन

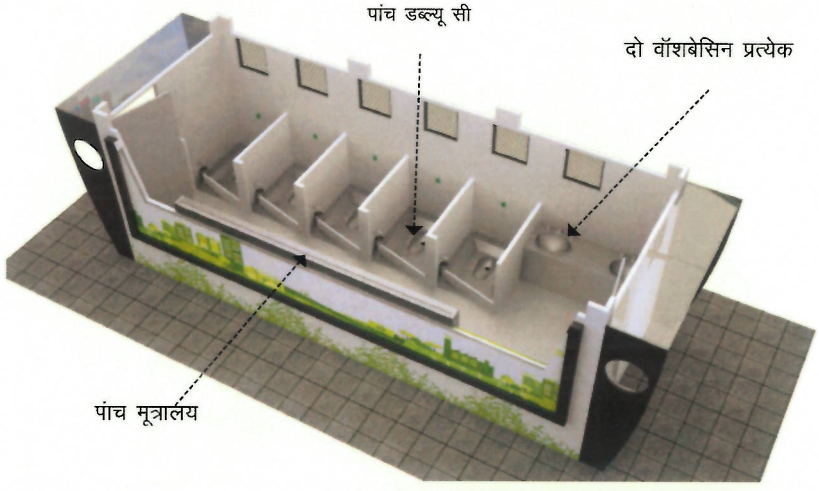

विकल्प 04

पांच डब्ल्यू सी.के.साथ दो मूत्रालय तथा चार वॉशबेसिन

सामान्य आंतरिक फिक्सचर्स

दिल्ली में जलाशयों तथा हरित क्षेत्रों का पुन:जीवन - हरिनगर अध्ययन

पूर्व समय में, दिल्ली में झीलों, तालाबों, तथा प्राकृतिक झरनों आदि के रुप में 600 से अधिक जलाशय थे। इन जलाशयों पर कई प्रकार की वनस्पतियों तथा जीवों का विकास हुआ। इन जलाशयों ने सूक्ष्म जलवायु सृजन करने के साथ–साथ नमी को बनाए रखने तत्पश्चात भूजल की मात्रा को कम होने से बचाए रखा।

तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण से, पिछले कुछ वर्षों से यह जलाशय लुप्त हो गए हैं। बाकी बचे जलाशयों को भी बढ़ती आबादी से यही खतरा है। नगरवासियों के अतिक्रमण, व्यवहारिक पुनः नवीनीकरण के अभाव में मलबा इन जलाशयों में डालने के कारण, इनकी स्थिति दयनीय हो गई है।

दिल्ली में बहुत कम वर्षा होने के कारण इन जलाशयों के पुनः भरण के लिए वर्षा व्यावहारिक समाधान नहीं है।

दिल्ली में इन जलाशयों की कमी के संदर्भ में, दिल्ली नगर कला आयोग, एक संवैधानिक निकाय जो संसद के अधिनियम, दिल्ली नगर कला आयोग 1974 के तहत स्थापित की गई थी, दिल्ली में कुछ जलाशयों के कायाकल्प के लिए अभिकल्प डिजाइन अध्ययन शुरू किया। एक ऐसा महत्वपूर्ण जलाशय जो पतन के हालत में है, पश्चिम दिल्ली में हरि नगर ग्रीन में मौजूद है।

जबकि प्रत्येक जलाशय को अपनी जीविका के लिए विशिष्ट प्रस्ताव की आवश्यकता होती है, वार्ड 111 में स्थित हरि नगर हरित क्षेत्र में जलाशय के पुनरुत्थान के प्रस्ताव के साथ के अध्ययन के माध्यम से किया जा रहा है, इसी तरह के अभ्यास के संबंध में शहर के अन्य जलाशयों के कायाकल्प के लिए समान अभ्यास किया जाएगा।

प्रस्ताव

''ग्रीनवेज़'' परियोजना का लक्ष्य शहर के हरित आवरण को जोड़ना और समेकित करना है। यह एक संयोजी ऊतक के रूप में माना जाता है ''ग्रीनवेज़'' पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ पैदल यात्री मित्र है जो शहरीकरण को बनाने का प्रयास करता है। हरि नगर झील और आसपास के इलाकों का उपयोग इस दृष्टिकोण के लिए एक प्रस्ताव अध्ययन के रूप में किया गया है।

हरि नगर झील या तिहाड़ झील डीडीए जिला पार्क का हिस्सा है, जिसे हरि नगर झील पार्क भी कहा जाता है जो कि ज़ोन जी में पश्चिम दिल्ली में स्थित है। पार्क का कुल क्षेत्र प्राकृतिक झील या झील के साथ लगभग 50 एकड़ जमीन है। झील का पानी कम हो गया है और चार साल से पानी की गतिविधियों जैसे नौकायन रोक दिया गया है। पश्चिम दिल्ली में उस पार्क के आसपास कई अन्य मौजूदा उद्यान/पार्क हैं जिनको जोड़ा जा सकता है और पैदल पथों/साइकिल पथों से जोड़े जा सकते हैं, उनमें से कुछ पार्कों का रख रखाव किया गया है जबकि कुछ बहुत खराब स्थिति में हैं, कुछ क्षेत्रों में सिर्फ खुली/बंजर भूमि हैं, जिनका प्रयोग नहीं किया जा रहा है और वे छोड़ दिए गए हैं।

पैदल यात्री मित्र शहरीकरण हरि नगर झील और आसपास के इलाकों का उपयोग इस दृष्टिकोण के लिए केस अध्ययन के रूप में किया गया है।

इस प्रस्ताव का लक्ष्य, पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र के लिए अंतर–संयोजक हरित पट्टी निर्मित करना है। एक बार इस प्रकार का दृष्टिकोण बन जाने पर यह नगर के अन्य स्थानों के लिए भी कारगर सिद्ध हो सकता है। इसमें जनसाधारण की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निकट क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर स्थानीय शॉपिंग सैन्टर बनाए जाने का भी लक्ष्य है। इसके लिए पश्चिमी दिल्ली का हरित क्षेत्र हरि नगर झील, प्रमुख केन्द्र है क्योंकि यह स्थानीय लोगों के आकर्षण का कार्य करेगा। प्रस्ताव के तीन प्रमुख लक्ष्य है जिसमें हरि नगर झील को दोबारा पानी से भरा जाना, निकट के बस स्टॉप/मैट्रो स्टेशन को स्थानीय ई–रिक्शा नेटवर्क से इस हरित क्षेत्र से जोड़ा जाना ताकि यहाँ आने वाले आगंतुकों को सुविधा रहे तथा तीसरा निर्बाध पैदल पथों/साइकिल पगडंडी का हरित मोड़ के बीच स्पष्ट संयोजन बनाना शामिल हैं।

प्रस्तावों को संकल्पनात्मक चित्रों के संकलन और 3डी दृश्यों के विवरण के साथ तैयार किया गया है जो दिल्ली के अन्य क्षेत्रों में लागू पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

उद्देश्य

- विद्यमान झील का पुनः भरण तथा इसके साथ सटे क्षेत्रों का सुधार
- प्रतिदिन जीवन प्रक्रिया, ग्रीनवे के माध्यम से शहरी हरित क्षेत्र से जुड़ें

प्रीफेब ब्लॉक सिस्टम

हल्के पूर्वनिर्मित ब्लॉकों के साथ स्थानीय क्रय क्षेत्रों को तैयार करें, जिसमें लोगों की रोज़मर्रा की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है जिसमें सफल स्टोर, केन्द्रीय भंडार, अख़बार स्टोर, रेस्तरां इत्यादि शामिल हैं। अलग–अलग जगहों पर रखे DEWAT सिस्टम के साथ यह प्रीफैब ब्लॉक सिस्टम 'आस–पास क्षेत्रों के लिए एक मनोरंजन केंद्र के रूप में कार्य करता है।

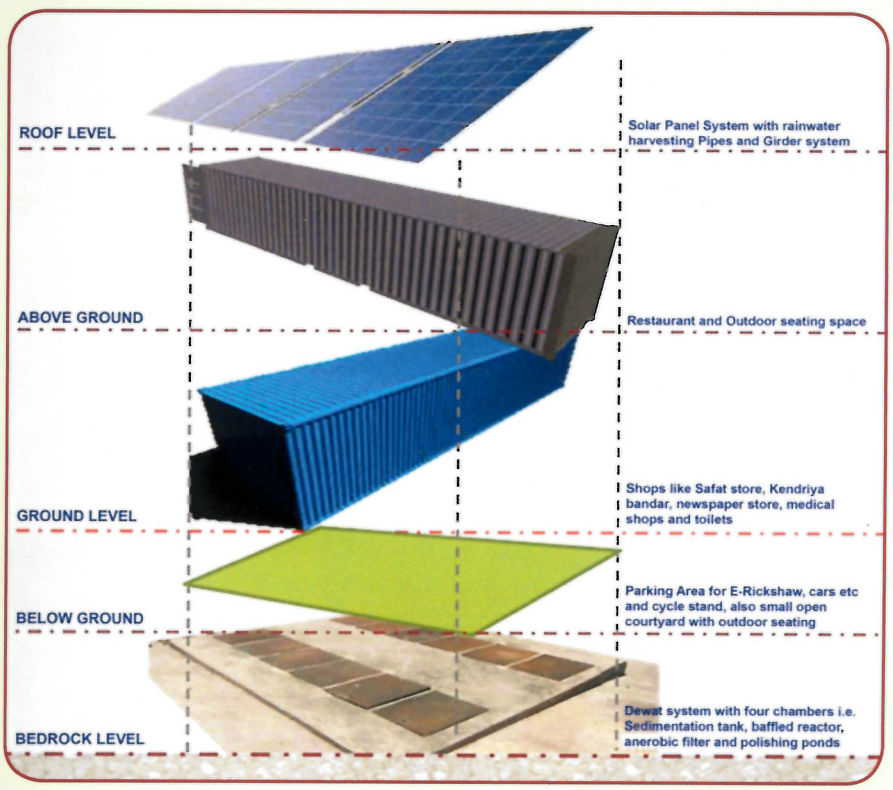

झील का पुन:भरण

- झील के रिचार्जिंग की पूरी प्रणाली में विभिन्न प्रक्रियाएं शामिल हैं
- उपचरित सीवेज और सतही बारिश के पानी से सीधा सम्पर्क
- झील के लिए भूजल का पानी
- झील तक पहुंचने के लिए उपचरित नाले
- DEWAT प्रक्रिया

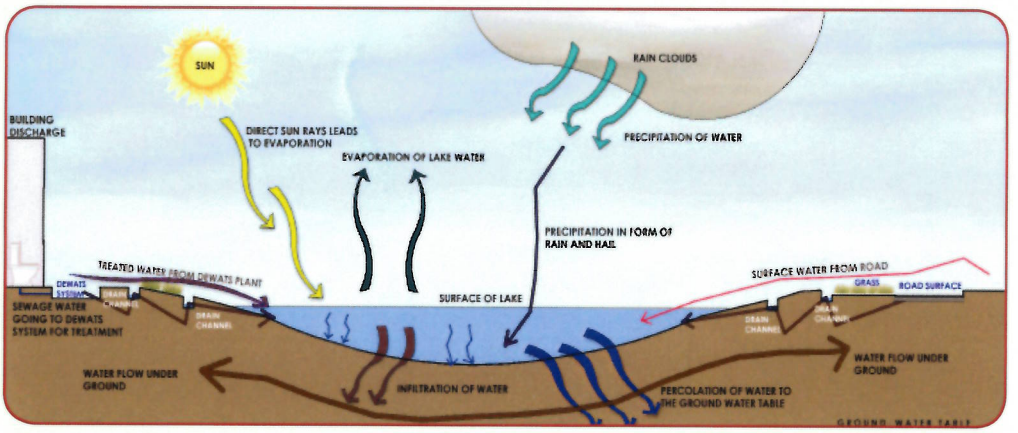

हरि नगर झील पार्क के चारों ओर के हस्तक्षेप का क्षेत्र सुभाष नगर, फतेह नगर, अशोक नगर, तिहाड़ गांव, हरि नगर, मायापुरी और राजौरी गार्डन शामिल हैं।

विद्यमान सड़कों के साथ बहने वाले सीवेज पानी को खुली/बंजर भूमि में स्थित विभिन्न स्थानों पर DEWATS पौधों द्वारा उपचार किया जाएगा। इस उपचार के पानी को नाली चैनलों के माध्यम से लाया जाएगा और झील को भरने के लिए प्रस्तावित लाइनों के साथ विस्तारित किया जाएगा।

DEWAT प्रक्रिया मौजूदा सड़कों के साथ बहने वाले सीवेज पानी का डीवैस पीएलए द्वारा इलाज किया जाएगा। विकेंद्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली केवल कम लागत और कम रखरखाव प्रौद्योगिकी के साथ सीवेज के उपचार का एक स्व–स्थायी मॉडल है। यह एक ऐसी प्रणाली है जो काले/भूरे रंग के पानी को परिवर्तित करती है, अर्थात सीवेज पानी (आसपास के इलाकों से आ रहा है) से मीठे पानी तक पानी सिंचाई और झील को रिचार्ज करने के लिए उपयुक्त है।

DEWAT क्षमता की झील/ग्रीन्स के आसपास के क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व के अनुसार गणना की जाती है। इसमें चार चरण हैं:

- प्राथमिक उपचार : सेप्टिक टैंक
- माध्यमिक उपचार :
  - एनाएरोबिक बेफल्ड अप–फ्लो रीएक्टर
  - एनाएरोबिक फिल्टर
- तृतीय उपचार : एरोबिक ट्रीटमेंट

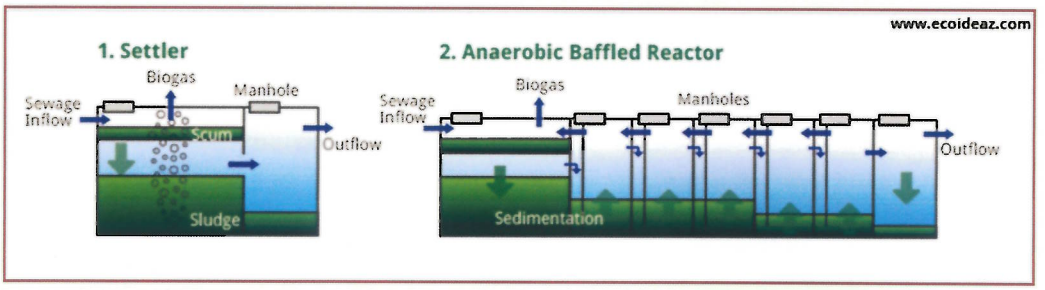

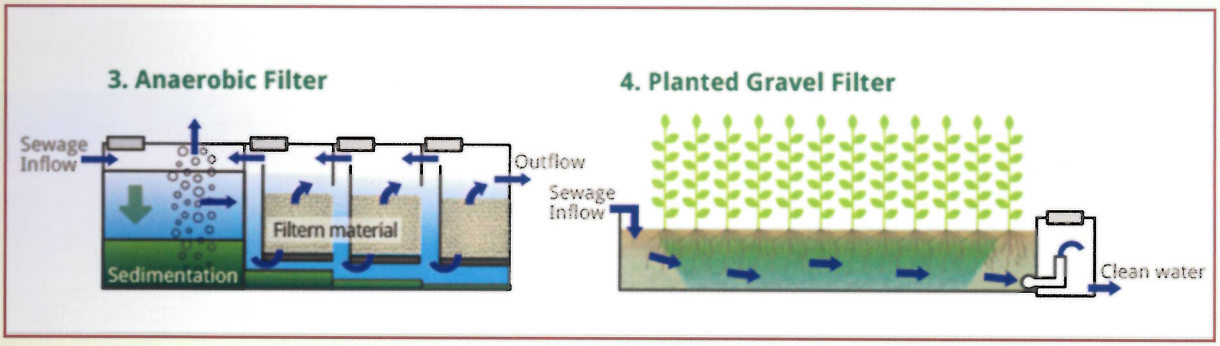

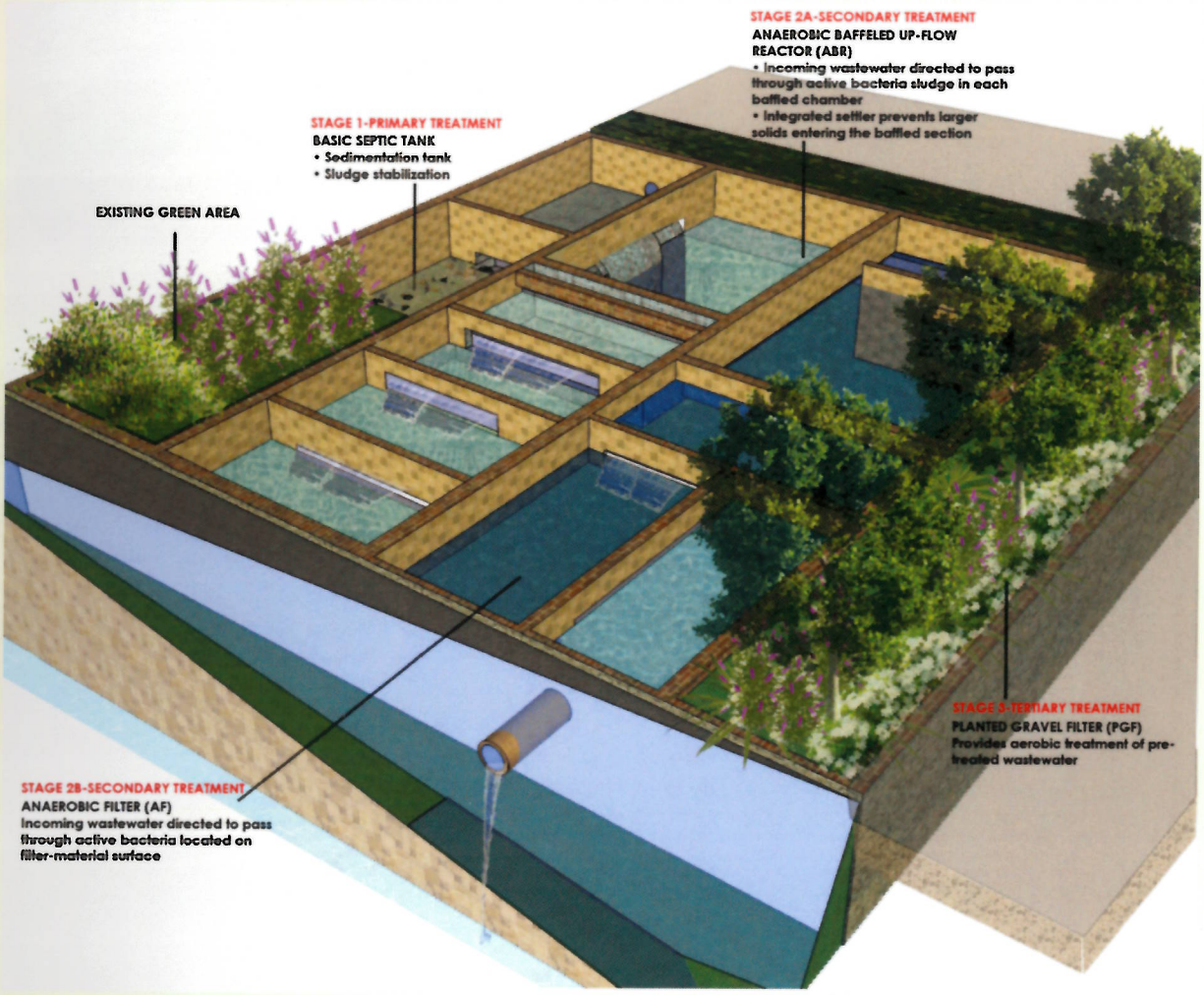

- बारिश के पानी का संग्रहण

बरसाती पानी का संग्रहण दो प्रकार से किया जा सकता है :

- पाइप प्रणाली के भीतर प्रक्रिया को स्थापित करके बरसाती जल नालियों के माध्यम से सीधे।
- निस्पंदन सिस्टम से जुड़े गड्ढों में बारिश के पानी के संग्रहण के माध्यम से या अच्छी तरह से एकत्र करने और एकत्रित करने के माध्यम से वाटर टेबल का रिचार्ज करना।

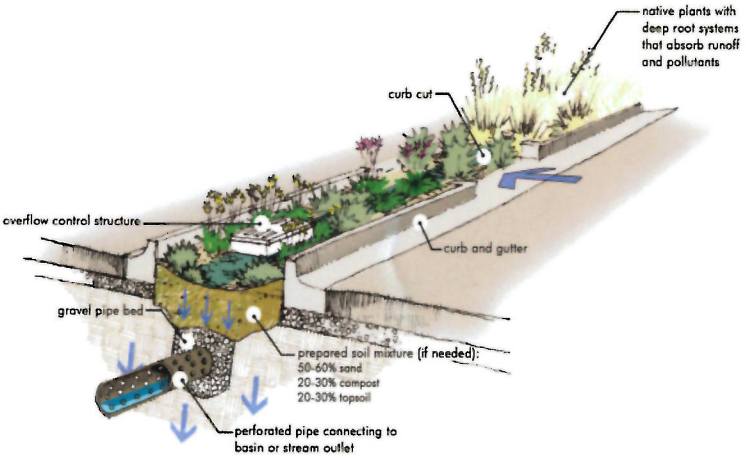

413. हरित क्षेत्र को जोड़ना और मौलिक सुविधाएं प्रदान करना

- हरित क्षेत्र के साथ निकटतम बस स्टॉप से जोड़ने के लिए ई–रिक्शा रूट नेटवर्क बनाएं।

पार्श्व दृश्य जिसमें ई–रिक्शा पार्किंग तथा साईकिल स्टैंड के साथ किओस्क के सामने का भाग दर्शाया गया है।

- एक सतत पैदल यात्री प्रणाली बनाने के लिए, विभिन्न हरित क्षेत्र को इसे साईकिल क्षेत्र बनाने के लिए जोड़ा जाए।
- हरितक्षेत्र के बीच प्रवेश और संयोजक नोड को चिन्हित करें और उसे फिर से जीवंत करें।

योजना की मुख्य विशेषताएं

- सामुदायिक हॉल जो 325 वर्ग मीटर हैं, अधिक लोगों के लिए सटे खुले हरित स्थान के साथ डिजाइन किया गया है।
- सौर पैनल छत के साथ रेस्तरां ब्लॉक तथा अधिक लोगों के लिए शौचालय ब्लॉक बैठने की जगह के पास मौजूद हैं।
- दो–पहिया पार्किंग के साथ 20 कारों के लिए ओपन–एयर पार्किंग है; अन्य वाहनों के लिए भूमिगत पार्किंग है।
- अन्य सुविधाओं में बैठने के साथ बच्चों के खेल क्षेत्र और प्राकृतिक क्षेत्र शामिल हैं।
- सड़क पार करने के लिए इसे एक केंद्रीय फोकल बिंदु के साथ पैदल यात्री अनुकूल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- लोगों की आवश्यकता पूर्ति करने के लिए स्थल के विभिन्न स्थान।
- सौर छत के साथ छोटे खाद्य कियोस्क बनाए गए हैं।
- खुले आंगन बैठने के लिए लोगों को आराम करने और समय व्यतीत करने के लिए झाड़ी **(shrubbery)** की पट्टियां हैं।

दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में जलाशयों के पुनरुत्थान और जीवंतता हेतु प्राकृतिक संसाधनों को कम करने के साथ ही अपशिष्ट जल के रीसाइक्लिंग के आधार पर प्रस्तुत ऐसी योजनाएं होंगी।

लेखकः विनोद कुमार, सचिव, दिल्ली नगर कला आयोग
राहुल बी. सिंह, वरिष्ठ कंसल्टेंट, दिल्ली नगर कला आयोग
स्निग्धा सरकार, निखिल पाण्डे, कंसल्टेंट, दिल्ली नगर कला आयोग

संदर्भः हरिनगर हरित क्षेत्र, दिल्ली नगर कला आयोग रिपोर्ट

जौन्ती गांव

परियोजना के बारे में

जौन्ती गांव दिल्ली के उत्तर–पश्चिमी जिले में स्थित है। यह कन्जावाला–कुतुबगढ़ रोड के पास स्थित है। यह अक्तूबर 2014 में भारत सरकार द्वारा आरम्भ एक ग्राम विकास परियोजना, संसद आदर्श ग्राम योजना (एसएजीवाई) के तहत गोद लिया गया है जिसके तहत प्रत्येक सदस्य संसद एक विशेष गांव के भौतिक और संस्थागत बुनियादी ढांचे के विकास की जिम्मेदारी लेता है। संसद के कार्यालय से दि.न.क.आ. को संसद आदर्श ग्राम योजना पहल के तहत सौंपी गई परियोजना में गांव के लिए एक व्यापक बुनियादी ढांचा विकास योजना विकसित करना शामिल है। इसमें गांव की क्षमताओं को पर्यटन विकास योजना, बुनियादी ढांचे के विकास और उसके जल प्रणालियों के संरक्षण में सम्मिलित करना शामिल है। इसका उद्देश्य सामुदायिक विकास योजनाओं के माध्यम से स्थानीय आबादी के लिए एक आर्थिक और रोजगार जनरेटर के रूप में कार्य करना है।

1 गेटवे का डिज़ाइन

गाँव को अपने प्रवेश बिंदुओं का 'द्वार' चिह्नित करना

गांव में प्रवेश द्वार संरचना का उद्देश्य गांव के ऐतिहासिक महत्व और उसकी समृद्ध वास्तुकला चरित्र को स्मरण करने हेतु है।

जौन्ती गांव के प्रवेश द्वार का डिज़ाइन एक मुगल शिकार घर, पारंपरिक हवेली और घरों वाले गांव की समृद्ध वास्तुकला स्वरुप से प्रेरित है।

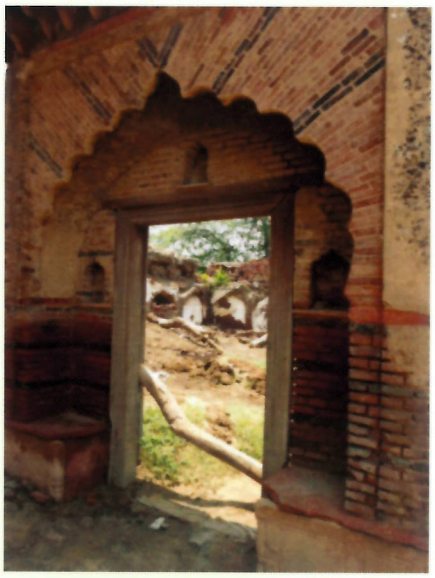

2 हेरिटेज ट्रेल विकसित किया जाना

पैदल पथ से आगंतुक गांव के स्वरुप का पूरा अनुभव कर सकते हैं। गांव का दौरा, संकीर्ण लेनों, इसका समृद्ध वास्तुशिल्प चरित्र, पारंपरिक घरों, चौपाल, कुओं आदि के माध्यम से चौक से होते हुए और मनोरंजक तालाब परिसर में समाप्त होता है।

3 गांव में 'चौक' का विकास

गांव के चौक दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, वे पर्यटकों के लिए आराम और मनोरंजक बिंदु बनाते हैं और गांव के निवासियों के लिए स्थानीय स्तर पर मीटिंग प्वाइंट बनाते हैं। वे गांव के लिए बुनियादी सुविधाएं प्रदान करते हैं; इसमें प्रस्तावित तत्वों में कियोस्क/दूध बूथ, संयुक्त सुविधाएं, पेयजल और सार्वजनिक शौचालयों के साथ सुपरमार्केट शामिल है।

चित्र 4: गांव के प्रवेश पर स्थित चौक का प्रस्तावित दृश्य

यह चौक शिकारगाह की तरफ प्रवेश पर स्थित है और इसमें निम्नलिखित विशेषताएं हैं: (क) बैठने की जगह (ख) प्रदर्शनी स्थान (ग) एनएमवी और दो–पहिया वाहनों के लिए पार्किंग (घ) व्याख्या केंद्र (ड.) विधि कला (च) दिशात्मक और सूचना संकेतक।

4 'तालाब' तथा उसके परिवेश का विकास

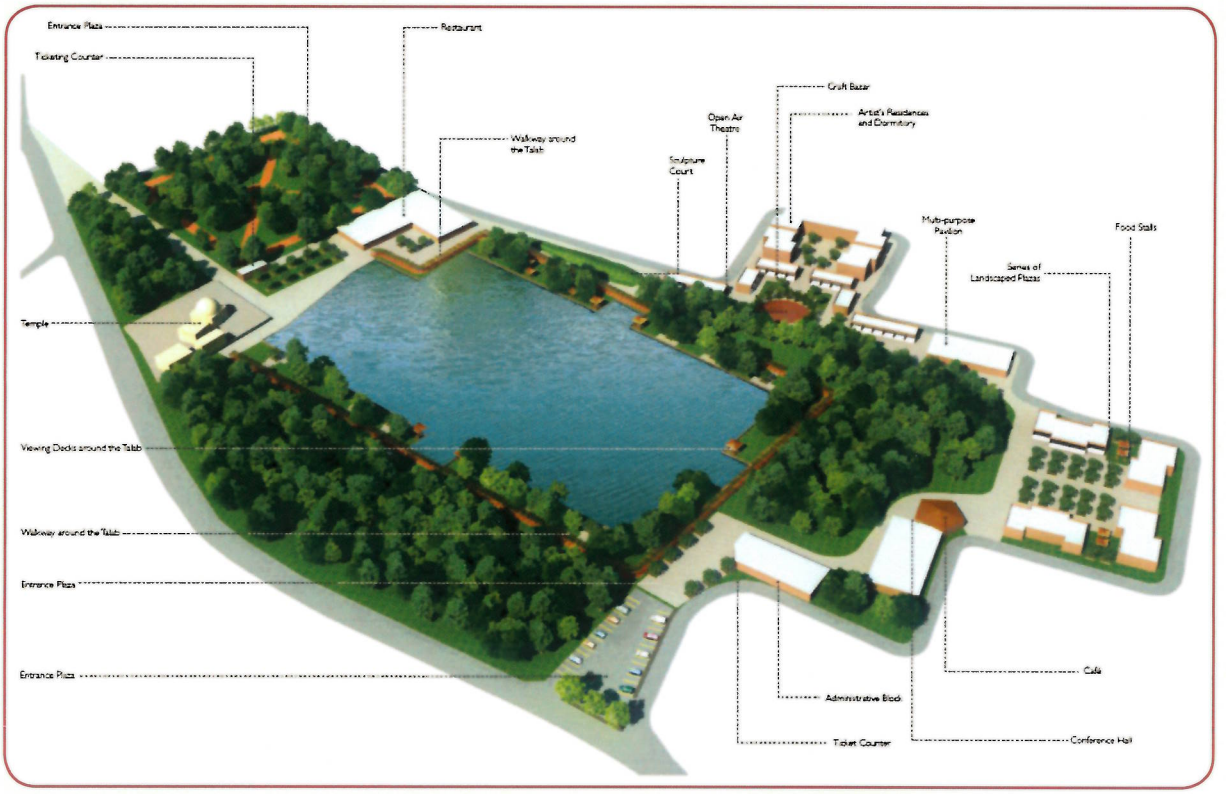

चित्र 5: तालाब तथा परिवेश को दर्शाते हुये प्रस्तावित दृश्य

तालाब के चहुंओर वाटर बॉडी के आस–पास ढका हुआ परिचालन रास्ता अनुभवपरक पहलू सृजित करता है।

तालाब के आस–पास ढके हुए बैठने के स्थान/फुर्सत के क्षण बिताने हेतु सृजित किए गए हैं।

प्राचीन मुगल तालाबों के आस–पास क्षेत्र पर्यटन के विकास के लिए एक आदर्श क्षेत्र बनाता है क्योंकि इसका एक दर्शनीय मूल्य है और यह ग्राम सभा की भूमि से घिरा हुआ है।

पर्यटन विकास के लिए उपलब्ध क्षेत्र 14.92 एकड़ है और मंदिर परिसर की भूमि 387 एकड़ है। इसे व्यावसायिक उद्देश्य के लिए विकसित करने और अपनी प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव दिए गए हैं:

प्रवेश प्लाजा, टिकट काउंटर, प्रशासनिक ब्लॉक, रेस्तरां, कैफे, खाद्य स्टालों, शिल्प बाजार, कलाकारों के आवास और शयनगृह, बहुउद्देशीय मंडप, मूर्तिकला कोर्ट, ओपन एयर थियेटर, प्रवेश प्लाजा की श्रृंखला, तालाब के चारों ओर वाकवे।

5. गांव के प्रवेश मार्ग में सुधार

प्रस्ताव सुझाव देता है कि कैसे आगंतुक/पर्यटक गांव में भीड.–भाड़ किए बिना परिधीय रास्तों से गांव तक पहुंच सकता है। विद्यमान गांव की ओर प्रवेश मार्गों का प्रावधान किया गया है।

6. गांव की ओर प्रवेश मार्ग तथा संयोजन नक्शे

गांव के भीतर जलाशय जल संरक्षण के लिए संभावित है, अर्थात तालाब का रिचार्जिंग, पुराने ऐतिहासिक कुएं और मौसमी जोहड़ साथ ही, जौन्ती गांव के कायाकल्प के लिए भी इसे लागू किया जा सकता है, जिससे वर्तमान में पानी को आवधिक तौर पर छोड़े जाने की आवश्यकता है। जल संरक्षण में खुली जगह की संभावनाओं का इस्तेमाल करने के प्रमुख तरीके वर्षा जल संचयन और वर्षा जल प्रबंधन के माध्यम से है।

चित्र 6

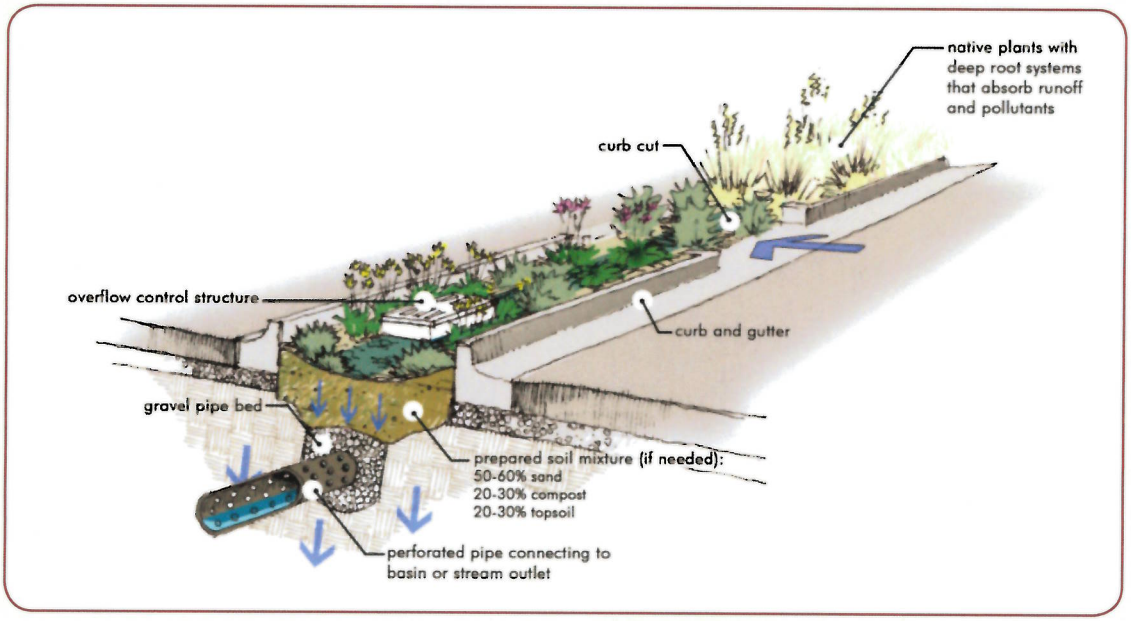

प्रो. डॉ. पी.एस.एन.राव. अध्यक्ष
सुलभ गोयल
वनीता वर्मा

कचरा प्रबंधन, सी.आर. पार्क, दिल्ली

परियोजना के बारे में

नगर कचरा अपशिष्ट (एमएसडब्लू) प्रबंधन की समस्या ने भारत में विशेष रूप से पिछले कुछ दशकों में खतरनाक आयाम हासिल कर लिया है जो कि अनियोजित विकास गतिविधियों, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ लोगों की बदलती जीवन शैली के कारण हुआ है। ठोस कचरा प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) में ठोस कचरे से निपटने की पूरी प्रक्रिया में, कूड़ा सृजन से शुरू होकर, प्राथमिक स्रोत से अंतिम निपटान के लिए एक स्वस्थ और वैज्ञानिक तरीके से संग्रह शामिल है। अगर किसी वैज्ञानिक तरीके से निपटान नहीं किया जाता है, तो एमएसडब्लू के स्वास्थ्य, पर्यावरण और भूमि संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस अध्ययन में वार्ड 190 में कचरे के सृजन को समझा है, क्योंकि दुर्गा पूजा के शिखर उत्सव के मौसम में कूड़ा सृजन बढ़ जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश निवासी बंगाली समुदाय से संबंधित हैं। अध्ययन का दायरा संग्रह, अलगाव, भंडारण, परिवहन, संसाधन/संसाधन वसूली और नगरपालिका ठोस कचरे के निपटान के मुद्दों, संभावनाओं और फ्रेमिंग रणनीतियों के विश्लेषण पर केंद्रित है।

भारत सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' अभियान, स्वास्थ्य और स्वच्छता के आलोक में, 2 अक्तूबर 2014 को शुरू किया गया। रिपोर्ट में विकेंद्रीकृत और समावेशी माध्यम से नगरपालिका वार्ड 190 में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के संबंध में साफ–सफाई में सुधार करने, अपशिष्ट प्रबंधन, संसाधन कूड़ा सृजन, भूमि पर दबाव कम करना और अनौपचारिक कूड़ा बीनने वालों का सामाजिक समावेश करने का प्रयास किया गया।

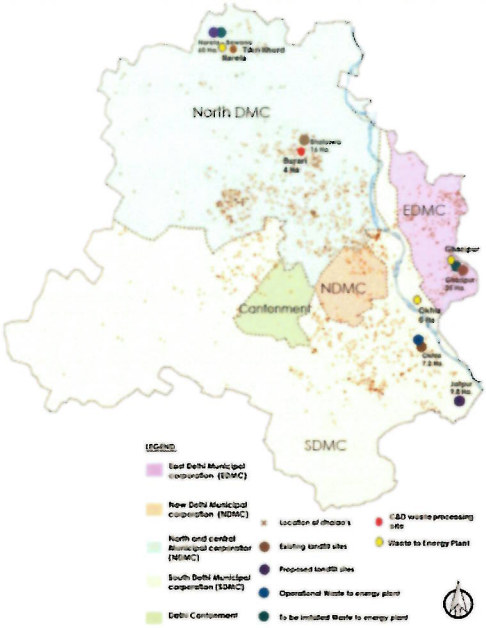

दिल्ली में लैंडफिल और अपशिष्ट उपचार साइटें

दिल्ली में 1975 से बीस लैंडफिल साइटें विकसित की गई हैं, जिनमें से 15 पहले ही बंद हो चुकी हैं और दो को रोक दिया गया है। वर्तमान में व्यवहार (आपरेशन) में तीन लैंडफिल साइटें हैं, भलस्वा, गाजीपुर और ओखला। इनके परिचालन के तीन व्यावहारिक स्थलों की क्षमता लगभग समाप्त हो गई है, लेकिन कचरे की डंपिंग अब भी जारी है।

The Waste Management Hierarchy

1. Avoid	• Maximum conservation of resources and prevention of waste.	Most preferred Option
2. Reuse	• Reusing materials.	
3. Recycle	• Recycling and Reprocessing materials.	
4. Waste to energy	• Energy recovery prior to disposal.	
5. Disposal of waste	• Zero conservation of resources.	Least preferred Option

कूड़ा प्रबंधन के दृष्टिकोण से प्रौद्योगिकी और सामाजिक–आर्थिक गतिविधि का एक एकीकृत तंत्र होना चाहिए जिसका लक्ष्य उत्पाद से व्यावहारिक लाभ को अधिकतम करने और कचरे को न्यूनतम उत्पन्न करना है। अतः, कचरा प्रबंधन, कचरे को कम करने और प्रबंधित करने की कार्रवाई के लिए प्राथमिकता का क्रम दर्शाता है।

कूड़ा प्रबंधन के दृष्टिकोण से प्रौद्योगिकी और सामाजिक–आर्थिक गतिविधि का एक एकीकृत तंत्र होना चाहिए जिसका लक्ष्य उत्पाद से व्यावहारिक लाभ को अधिकतम करने और कचरे को न्यूनतम उत्पन्न करना है। अतः, कचरा प्रबंधन, कचरे को कम करने और प्रबंधित करने की कार्रवाई के लिए प्राथमिकता का क्रम दर्शाता है।

सामुदायिक स्तर पर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की विकेंद्रीकरण प्रक्रिया

1 अपशिष्ट सृजन से बचें।

- अपशिष्ट सृजन की रोकथाम।
- कूड़ा सृजन के स्रोत पर अलग– अलग किया जाना।
- घरों से ही बायोडिग्रेडेबल और गैर–डिग्रेडेबल अपशिष्ट के लिए उपयोग किए जाने वाले रंग कोडित डिब्बे।

2 प्रशिक्षित सफाई कर्मचारियों द्वारा डोर–टू–डोर (घर –घर जाकर) ढके हुए मैनुअल रिक्शा/ऑटो टिपर्स में संग्रह (प्राथमिक संग्रह)।

- रंगीन कोडित डिब्बे जो कि परिवारों से अलग–अलग प्रकार की अपशिष्ट एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाते थे।

3 माध्यमिक संग्रहण जैसे कि ढलाव/उच्च तकनीक रीसाइक्लिंग डिपो/रंग कोडित सामुदायिक डिब्बे में स्थानांतरण।

गैर–विघटित कचरे के दहनशील/निष्क्रिय/पुनः प्रयोज्य अपशिष्ट आदि के अलावा छंटाई और कूडा अलग–अलग करना।

सामग्री रिकवरी सुविधा–कम्पोस्टिंग प्लांट, बायोडाइजेस्टर प्लांट, ऊर्जा अपशिष्ट उपचार संयंत्र, सी एंड डी रीसायकल प्लांट, मेटल रीसायकल प्लांट, आदि के लिए अलग–अलग कचरे का अस्थायी भंडारण।

4 विभिन्न सामग्री रिकवरी सुविधा इकाईयां जैसे सीएंडडी रूपांतरण जैसे विभिन्न कचरे के संसाधन पुनः प्राप्ति, निर्माण सामग्री में, दहनशील अपशिष्ट–से–ऊर्जा में, बायोडिग्रेडेबल खाद, धातु में पुनर्नवीनीकरण धातुएं आदि।

5 पुनर्प्राप्ति केंद्र और राजस्व/ऊर्जा उत्पादन पर अलग–अलग कचरे का पुनः उपयोग/पुनर्चक्रण।

6 ढके हुए वाहनों (मैनुअल/मैकेनिकल लोडिंग) का उपयोग करके रिसेप्टेक से लैंडफिल तक, फैंके गए कचरे का परिवहन।

स्थल की स्थिति के अनुरुप प्रस्तावित तंत्र।

शून्य अपशिष्ट प्रबंधन को प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार वार्ड 190 में अपशिष्ट प्रबंधन सुविधाओं के निम्नलिखित का प्रस्ताव है:

Type of Depot/ Receptacle	Facilities Proposed			
	Recycling Depot	Composting Pits	Biodigester	Public Toilet
I				
II				
III				
IV	Colour Coded Community/Municipal Bins			
V	Biogas Plant for Ward Level Biodegradable waste-to-energy processing			

Facilities incorporated in the design of depot

Facilities not added in the design of depot

"उच्च–तकनीक रीसाइक्लिंग डिपो की मुख्य विशेषताएं:

- सार्वजनिक शौचालय सुविधा और पेयजल।
- छंटाई के लिए स्वच्छ/नियोजित स्थान – ठोस कचरे के लिए अलग–अलग किया जाने और अस्थायी भंडारण सुविधाएं।
- कचरे के पुनर्चक्रण और लैंडफिल साइट पर दबाव कम करना।
- 40% अपशिष्ट (बायोडिग्रैडबल) के सामुदायिक स्तर पर विकेंद्रीकृत खाद बनाना।
- ढलाव के आसपास के इलाकों में आवारा जानवरों से जुड़ी समस्याओं को विनियमित करना।
- कचरे के चयन, अलग–अलग किए जाने, परिवहन, हैंडलिंग और रीसाइक्लिंग के साथ जुड़े श्रमिकों के लिए बेहतर काम की जगह।
- संसाधन वसूली, आर्थिक अवसर और राजस्व सृजन।

नीति के हस्तक्षेप के लिए दृष्टिकोण

1 केंद्रीय/राज्य हस्तक्षेप और रणनीतियां:

- अपशिष्ट सृजन के निवारण और न्यूनीकरण के लिए नीतियों को बढ़ावा देना और फ्रेम करना।
- नगर पालिका सेवा शुल्क में छूट के मामले में सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए और गैर–अलग कचरे के लिए हतोत्साहित करना या दंड देना।
- कूड़ा घर/सामुदायिक डिब्बे/कूड़े के डिब्बे के स्थानिक पैटर्न के मानकों को शामिल करना, यानी प्रति यूनिट क्षेत्र में कूडेदानों की संख्या अथवा उनके बीच की दूरी। बायोडिग्रेडेबल कचरे के लैंडफिलिंग पर प्रतिबंध।
- गैर–पुनः प्रयोज्य प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध।
- कचरे को रीसाइक्लिंग के लिए स्टार्ट–अप बिजनेस मॉडल में रुचि रखने वाले स्थानीय लोगों के लिए वित्तीय सहायता और तकनीकी जानकारियों का प्रावधान
- अपशिष्ट रीसाइक्लिंग व्यवसाय शुरू करने के लिए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना।
- सार्वजनिक, स्कूल, कॉलेज और संस्थानों के लिए कचरा प्रबंधन पर शिक्षा कार्यक्रम/कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। प्रस्तावित शून्य अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के कार्यान्वयन के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रशिक्षण।
- संग्रह के लिए पीपीपी मॉडल – छंटनी – मौजूदा रग बीकर्स को शामिल करने और प्रशिक्षित करने और उनके लिए औपचारिक प्रशिक्षण और आय देकर उन्हें आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए अलगाव और परिवहन।
- कबाड़/स्क्रैप डीलरों के लिए रीसाइक्लिंग और औपचारिक स्थान प्रावधान में शामिल अनौपचारिक कार्यबल के प्रावधान को शामिल करना। दिल्ली–2021 के लिए मास्टर प्लान के सभी उपयोग क्षेत्रों में सुविधा (वर्तमान में जंक यार्ड और गोदामों का केवल प्रावधान दिया गया है और इन्हें केवल थोक वाणिज्यिक और विनिर्माण क्षेत्रों में ही अनुमति है।)
- 14 वर्ष से कम उम्र के कूड़ा बीनने वालों के लिए मूल शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करने के लिए एक समिति की स्थापना।

- मॉनीटरिंग समितियां जो कि किसी भी कार्रवाई के लिए सेवा प्रदाता को जवाबदेही के लिए सशक्त हों, स्थापित की जाएं।
- डेवलपमेंट अथॉरिटीज और सर्विस एजेंसियों को समाप्तप्रायः लैंडफिल साइट्स को बदलने के लिए कुशल लैंडफिल साइटों की स्थापना के लिए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिये।

2. नागरिक केंद्रित हस्तक्षेपः

- स्रोत पर घरेलू कचरे का अनिवार्य–अलग–अलग किया जाना
- कचरे के मिश्रण को हतोत्साहित करने के लिए, अलग–थलग ना करने के लिए जुर्माना। पुनर्नवीनीकरण कचरे के उत्पादक वस्तुओं के लिए प्रोत्साहन। रीसाइक्लेबल कचरे के निपटान से बचें और न केवल गीला/कार्बनिक कचरे का निपटान करें, जो पड़ोसी खाद संयंत्रों में जाता है।
- पड़ोस स्तर पर विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के स्वामित्व लेने के लिए नागरिकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए–कंपोस्टिंग (बायोडिग्रैडबल कचरा) और रीसाइक्लिंग (रीसाइक्लेबल कचरा)।

संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें तथा संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें तथा संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

- माननीय शहरी विकास एवं आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री जी की अध्यक्षता में दिनांक 18 अक्तूबर, 2016 को 10.30 बजे कोच्चि, केरल में शहरी विकास मंत्रालय एवं आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय की संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई।
- 21 अप्रैल, 2016 को प्रातः 11.00 बजे हैदराबाद में संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई।

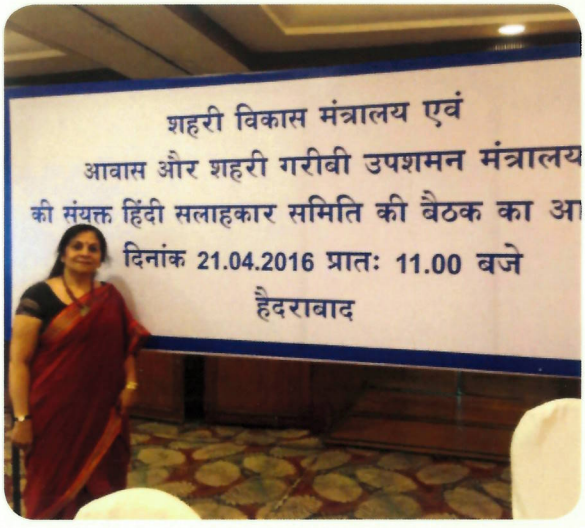

बैठकों में आयोग की ओर से अध्यक्ष महोदय, सचिव महोदय तथा दो राजभाषा प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान आयोग के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर कार्य किया।

संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 18 अप्रैल, 2017 को प्रातः 9.30 बजे, गुवाहाटी, असम में आयोजित की गई।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिल्ली नगर कला आयोग का दिनांक 30.12.2016 प्रातः 10.00 बजे निरीक्षण किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (मध्य) की पत्रिका मंदाकिनी,
तृतीय अंक 2016 में प्रकाशित कविता तथा लेख

सद्भावना

सद्भावना
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभागभवेत

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों,
सभी अच्छा–अच्छा देखें, कहीं कोई दुखी न हो।

मैं समझता हूं कि सद्भावना का इससे अच्छा उदाहरण नहीं हो सकता जिसमें सर्व कल्याण की भावना निहित है। मेरी नजरों में यह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना है जिसमें मनुष्य स्वः से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र के कल्याण की बात करता है। हमारे देश को देवभूमि पथ कहा जाता है। यहां पर परमात्मा बुद्ध ने

विश्व को शांति और अहिंसा का मार्ग दिखाया। इन्हीं आदेशों पर चलकर महात्मा गांधी जी ने अहिंसा के हथियार से भारतवर्ष को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद करवाया।

भारत एक सर्वधर्म समन्वयकारी देश है। हमारा देश विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम स्थल है। केवल इसी देश में विभिन्न संस्कृतियों को समान रूप से फलने–फूलने तथा पल्लवित होने का अवसर प्राप्त है।

यहां भांति–भांति के भाषा–भाषाई, संप्रदाय के लोग रहते हैं। हम सब में वर्ण, लिंग, रंग, धर्म इत्यादि का भेद है परंतु हमारा मन पूरी तरह से भारतीय है। यहां का प्रत्येक व्यक्ति सर्वप्रथम एक भारतीय है, उसके बाद उसका अस्तित्व दूसरा है। सभी धर्म या मजहब महान मानवीय मूल्यों को महत्व देते हैं। मजहब या धर्म व्यक्ति को सम्मान, सुसभ्य और सुसंस्कृत बनाकर सभी के अच्छे तत्वों को धारण करने, उनकी रक्षा करने की शक्ति दिया करता है। दया, करुणा सभी के प्रति प्रेम और सम्मान के साथ अपनेपन का भाव, शांति और अपने–अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित आस्था–वस्तुतः हर धर्म या मजहब का मूलमंत्र है। आज की युवा पीढ़ी को इस सत्यता को अपनाना होगा।

अंततः हम कह सकते हैं कि सभी धर्मों का एक ही सार है कि मानवता ही परम धर्म है। अंततः हम सभी को जाति, धर्म, मजहब आदि के बंधनों से ऊपर उठकर सारे संसार में मानवता और भाई–चारे की भावना को फैलाना होगा ताकि जाति, धर्म और मजहब के नाम पर भाई–भाई का खून न बहाए और विश्व में शांति बहाल हो।

राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)
दिल्ली नगर कला आयोग

शायद यही है जिंदगी

कभी ढलता सूरज लुभाता है,
कभी चढ़ती समरज किरणें चुभाता है
कभी छांव में ठंडक है तो,
कभी हृदय में कंपन है
कभी लगे जिंदगी संवर गई,
कभी लगे ये तो और ढल गई
कभी लगे अब न है कोई तलाश,
कभी लगे शायद न पूरी होगी आस
कभी लगे बस आज ये वक्त यहीं रुक जाए,
कभी लगे क्यों है ये ऐसे नजरें गड़ाए
कभी लगे चलो अब चल ही देते हैं,
पर तभी ये पांव क्यों थम जाते हैं
ख्वाहिशें बचपन की बदलती रह जाती हैं,
कुछ पूरी तो कुछ अधूरी रह जाती हैं
कभी सच को झूठ और झूठ को सच बनाना चाहते हैं,
कभी कुछ सच झूठ की परतों में ही दबे रह जाते हैं
कितना अच्छा है इस जिंदगी से और कितना चाहेंगे,
जितना मिला कहां तक चाहा बस यही ढूंढते रह जाएंगे
शायद यही है जिंदगी, हर घड़ी बदलने लगता है,
शायद यही है जिंदगी, फिर मन संभलने लगता है
पल पल बदलती इस जिंदगी की राह में कभी ठहराना
तो कभी ठहरकर फिर आगे बढ़ना ही पड़ता है।
शायद यही है जिंदगी, शायद यही है जिंदगी।

इंदु रावत, व. आशुलिपिक
दिल्ली नगर कला आयोग

अमर भारत की इस लाडली 'हिन्दी' के स्वरों में भारत की राष्ट्रीय आत्मा बोलती है।
– डॉ. संपूर्णानन्द

यही जीवन है

प्रातः आंख खुलते ही, हो जाते हम व्यस्त
भागम भाग ऐसी मची रहती, रहते अस्त–व्यस्त
घर में क्या हम, ऑफिस में भी रहने लगे हैं पस्त
नौकरी से क्या मिला तुझे है, माया मिली ना राम मिला
हालत रहती खस्त, शुक्र ऊपर वाले का कि रहते हैं हम मस्त
मंच मिलते रहें ऐसे कि प्रतिभा को मिले पंख दूर तक उड़ जाएं
रमा रहे जीवन आसक्त, मशीन बन गया इंसान
नकद नारायण का हो रहा है भक्त, पाषाण की तरह बन रहा है सख्त
खत्म हो रही सब इंसानियत काश खुल जाए आंख रहते वक्त
अच्छे दिन गर कहते इसी को तो यही सही
सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखिए,
मनमुटाव को कोसों दूर भगाए रखिए
चेहरे को मुस्कुराता यदि रखना हो,
सैवेंटी एम. एम. स्माइल मुखड़े पर सजाए रखिए
स्वस्थ शरीर सदैव यही चाहते हैं,
दिल को अपने साफ बनाए रखिए
हर काले बादल के पीछे चमकती लकीर होती है,
हर रात के बाद के खिली सुबह की तकदीर होती है।

कल्पना देवानी, हिन्दी अनुवादक
दिल्ली नगर कला आयोग

देश को भाषायी की दृष्टि से जोड़ने के लिए हिंदी ही एक मजबूत कड़ी है।
इंदिरा गांधी

ज़िद

सहकर्मी के तकिया कलाम, दीवाने की जिद है सुनकर
शब्द लगे कुलबुलाने, कुलबुला कर बने बुलबुले
बुलबुले अहसास बने, मन की कलम से स्याही
के रास्ते पन्नो पर, चल पड़ी लकीरें
चल पड़ी तो चलती ही गयी, माना काटों भरी है जीवन की राह
फूलों को पाने की जिद है दीवाने की
छूकर क्षितिज को आएगा मन, सच को इसने सच कहा शब्द नहीं
जो था मेरे पास कहा, भला बुरा अब दुनिया जाने
मैंने तो बिन्दास कहा, गर जमाने की नजर में
हिमाकत है ये तो दीवाने की, फितरत है ये
गर रस्मों रिवाज से बगावत, है तो दीवाने की जिद है
माना मन मौजी है, मनाना जमाने को
कठिन तो है, असंभव नहीं, दिलाएगें सम्मान अपनी भाषा को
बनाएगें भाषा जन–जन की इसको, दीवाने की जिद है

– कल्पना देवानी
हिन्दी अनुवादक
दिल्ली नगर कला आयोग

"हिन्दी भारत मां के ललाट की बिंदी है।"

–शंकरदयाल सिंह

अध्ययन उल्लास का, अलंकार और योग्यता का काम करता है।

–बेकन

देश की भाषा को अपनाए बिना एकता संभव नहीं है।
हिन्दी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है।,
यह सब की सहोदरा है।

–महादेवी वर्मा

दिल्ली नगर कला आयोग 2015–16

बाएं से दाएं सर्व / श्री शिक्षा देवी, रेनु बस्सी, सुनीता रानी, मंजु अंजलि, कल्पना देवानी, अलका धीर, निशि सचदेवा, वी. के. त्यागी, उमा भाटी, अमित मुखर्जी, सोनाली भगवती, दयाराम, सोनाली रस्तोगी, रविन्दर कुमार, प्रो. डॉ, पी. एस. एन. राव, श्री राम, समीर माथुर, राजवीर सिंह, विनोद कुमार, सुलभ, राजीव कुमार गौड़, अभिषेक गौरव, राहुल बी. सिंह, इंदु रावत, निखिल पांडे, संगीता एस., शेफाली गुप्ता, गोपाल सिंह, वनिता वर्मा, प्रियंका सुल्खलान, दिव्या मेनन, कीर्ति कावले।

सरकार की राजभाषा नीति

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

आयोग द्वारा राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों के अनुपालन में अपने दैनिक कार्य राजभाषा में करने के संबंध में उच्चस्तरीय संसदीय राजभाषा समिति ने सितंबर, 2011 में निरीक्षण किया। समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन हेतु व्यावहारिक कदम उठाए गए हैं जिनमें आयोग के द्विभाषी लोगो को अपनाना भी शामिल था और सभी सिफारिशों पर कार्यान्वयन रिपोर्ट शहरी विकास मंत्रालय को भेजी गई। सरकारी कार्यों के लिए हिंदी प्रयोग बढ़ाने की दृष्टि से वर्ष के दौरान तिमाही कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इसके अलावा अन्य संगठनों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

नराकास सम्मेलन में दिल्ली नगर कला आयोग की ओर से सचिव दिल्ली नगर कला आयोग तथा राजभाषा प्रतिनिधियों ने भाग लिया।